Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

03rd March 2020

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

405844/2020

04-02-2020

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश)

घर नं. 4-2-15, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद, के चुनाव के संदर्भ में

आवश्यक सूचना

मान्यवर प्रधान जी/मंत्री जी
आर्य समाज ....

सप्रेम नमस्ते !

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) का साधारण अधिवेशण दिनांक 02-02-2020 रविवार के दिन पं. नरेन्द्र भवन में सभा प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। साधारण सभा के मान्य सद्स्यों से सहित विशेष अतिथि के रूप में मान्य पं. धर्मपाल शास्त्री जी उपस्थित रहें। साधारण सभा में विषय सूचि के अनुसार अन्य विषयों सहित विशेषकर आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. -तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) के कार्यकाल के अवधि को अगले 6 महिने तक बढाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) के चुनाव 5 अगस्त 2020 से पूर्व कभी भी आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार सम्पन्न करवाने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) की साधारण सभा के लिए आर्य समाजों से आनेवाले प्रतिनिधि नियमानुसार निर्वाचित प्रतिनिधि ही होने चाहिए। अतः आर्य समाजों के अधिकारियों, विशेषकर समाज के मंत्री-प्रधानों को सभा निर्देश देती है कि आर्य समाज के सभी उपनियमों का विधिवत ढंग से पालनकर आर्य समाज के चुनाव को सम्पन्न करवाएं। **साधारण सभा में सर्वसम्मति से यह भी निर्णय हुआ कि आर्य समाजें अपनी समाज के चुनाव की तिथि सभा से सम्पर्क कर निश्चित करें तथा सभा को लिखित पूर्वक सूचित करें। समाज के चुनाव को सम्पन्न करवाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा से चुनाव अधिकारी को भेजा जाएगा।** चूंकि यह सभा के साधारण सभा का निर्णय है अतः आर्य समाज के चुनाव को सम्पन्न करवाने लिए सभा, चुनाव अधिकारि भेजेगी। चुनाव की पूर्व प्रक्रिया को हर समाज को पूरा करना होगा तथा सभी नियमों का पालन करते हुए प्रक्रियाओं का पूर्ण करना होगा। किसी भी हालत में समाजों के चुनाव 25 मार्च से पूर्व सम्पन्न कर 30 अप्रैल के पूर्व सभी विवरणों सहित सभा के नियमों का पालन करते हुए प्रतिनिधि आवेदन पत्र सभा कार्यालय में दाखल करें। निर्वाचित प्रतिनिधि का आधार कार्ड, मोबाईल नम्बर तथा पासपोर्ट साईज़ फोटा का होना आवश्यक है और जानकारी के लिए समाज व सभा के नियमों को पढ़े और पालन करें।

समाजों के निर्वाचन में मात्र समाज के सभासद् ही मतदान के अधिकारी होंगे। प्रथम 9 सभासदों पर एक प्रतिनिधि पश्चात् प्रति 20-20 सभासदों पर एक-एक प्रतिनिधि होगा। विवादास्पद समाजों के चुनाव आर्य प्रतिनिधि सभा करवाएगी या अंतरिम समिति का गठन आर्य प्रतिनिधि सभा करेगी जैसे आर्य समाज लालागुड़ा, आर्य समाज अशोक बाज़ार, आर्य समाज नलगोण्डा आदि।

भवदीय

विट्ठल राव आर्य
मंत्री सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश)

कार्यालय दूरभाष : 040-24753827,
24756983, 66758707, 9849560691

आर्य समाज और सामप्रदायिकता

-श्री पं. नरेन्द्र जी

आर्य समाज एक राष्ट्रीय, आदर्शवादी, धार्मिक तथा सुधारक संस्था है। इसका प्रादुर्भाव ही समाज-सुधार तथा संसार के अंतर्गत भटकते हुए मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करने के उद्देश्य से हुआ है।

ऐसे समय जबकि मतान्धता बढ़ रही थी, संकुचित दृष्टिकोण को प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा था, लोग जन्म-मूलक जाति पाति के विचारों से उन्मत्त थे, गरीबों का शोषण हो रहा था, एक का अधिकार दूसरा छीन रहा था, दरिद्रता बढ़ रही थी, पाशविक वृत्ति व्याप्त थी, स्वार्थ-परायणता अपनी सीमा को पार कर चुकी थी, लोगों का धर्म डांवाडौल अवस्था में था, पापों की कालिमा फैल रही थी, मानवता का अभाव होता जा रहा था और लोग अत्याचारों पर उतर जाए थे तब ऐसी स्थिति में परमात्मा को भी दया आयी और उसने मनुष्यों को सर्वनाश से बचाने के लिए अपना एक दूत पठाया।

प्रातः स्मरणीय महर्षि भगवान् दयानंद का प्रदुर्भाव हुआ। उनका आना था कि निष्क्रिय हृदयों में प्राणों का संचार होने लगा। आहत मानवता के धाव भरने लगे। आच्छादित तम तिमिर भागने लगा और प्रकाश की किरणें प्रबाहित होने लगी। बिछुड़े हुए परस्पर मिलने लगे और भटकता हुआ संसार अपना पथ खोजने में अग्रसर हुआ। भगवान् दयानंद का आगमन संसार के लिए प्रकाश और प्रगति की किरण थी। इतना ही नहीं ऋषि दयानन्द का आगमन मंगल प्रभात और शुभशकुन था। डूबने वाले उभरने लगे। पीड़ित पददलित तथा शोषितों ने अपना सखा पाया। दुष्कृत्यों का अंत हुआ और भोग विलास तथा ऐश्वर्य शालीनता शाही की समाप्ति हुई।

आर्य समाज कीस्थापना हुई और घर-घर धर्म की जय-जयकार गूंज उठी। धर्म और संस्कृति को प्रसारित होने का अवसर प्राप्त हुआ। ईश्वरके प्रति लोगों में आस्था होने लगी एवं लोग सदाचरण के लिए प्रेरित होकर सतकर्मों में तल्लीन होने लगे। जाति पांति के बंधनों की श्रृंखला शिथिल होने लगी। पूंजीवाद और निर्धनता में संघर्ष प्रारम्भ हुआ, दरिद्रय और सम्पन्नता में भी संघर्ष हुए बिना न रह सका। अविद्यांधकार ने मुखमोड़ा इसके स्थान पर विद्या का प्रकाश होने लगा।

आर्य समाज की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इसकी स्थापना ही धर्म-प्रचार और देश-सेवा के उद्देश्य से की गई। जहां वह सार्वभौमिक वैदिक धर्म का प्रचार करता है, एवं अनुवर्ती है, वहीं अपने देशके प्रति अटूट-श्रद्धा और प्रेम भी रखता है। इसको अपना देश सर्वाधिक प्रिय है। आर्य जाति में स्वदेश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। सर्व प्रथम आर्य समाज ने ही लोगों में देश-भक्ति की भावना को जाग्रत किया था। वे चाहे किसी भी मत के मानने वाले क्यों न रहे हों उन्हें इस ओर आकृष्ट किया। राष्ट्रीयता की भावना लोगों ने फैलाने का इसको सर्वाधिक श्रेय प्राप्त है। साथ ही यह संसार में एकता और संगठन की आवश्यकता को भी अनुभव करता है। इसके सिद्धान्त सार्वभौमिक है। एवं दूसरे अर्थो में यह मानवता का नेतृत्व करने आया है। इसकी सेवा की नींच ही उच्चादर्शों पर रखी गई है। यह जाति पांति की रेखाएं खींचकर परिधि नहीं बांधता और ना ही संकुचित दृष्टिकोण से किसी विषय पर विचार हीकरता है। रही बात सांप्रदायिकता की यह तो स्वप्न में भी संभव नहीं कि आर्य समाज इसको पसंद करे। समस्याएं चाहे धार्मिक हों अथवा सामाजिक या राजनीतिक वा राष्ट्रीय विशाल दृष्टिकोण से देखना ही इसका स्वभाव रहा है। इसके पास मत या परम्परा के अंधविश्वासों का कोई माप-दण्ड नहीं और न ही यह बात-बात में धर्म अथवा मत की दुहाई देकर अड़ंगा डालता है। किसी बात को मानकर फिर आना-कानी भी नहीं करता। छूत-छात को तो मानता ही नहीं और न संसार में किसी को भेद-भाव की दृष्टि से ही देखता है। इस प्रकार वह परमात्मा की कृपा को किसी वर्ग विशेष की बपौती नहीं मानता। वह तो सारे संसार को "वसुधैव कुटुम्बकम्" की दृष्टि से देखता है। सब को नेक बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है।

सांप्रदायिकता का पोषण और संकुचित दृष्टिकोण अंधविश्वासों और परम्पराओं पर आधारित रहने वाली जातियों की मनोवृत्ति की उपज है जो मत और सांप्रदायिकता को नशीली वस्तुओं की भांति घोल-घोल कर पीते हैं और इस मातन्धता के नशे में सारी दुनिया को देखने के अभ्यासी हैं। बाते तो समानता और समभावों की होती हैं किंतु व्यवहार इस से विपरीत होता है। एक से दूसरे वर्ग के लोगों में घृणा और भेदभाव पैदा करना इनका उद्देश्य होता है। वास्तविक रूप में जो लोग सांप्रदायिकता का विष फैलाते है वे कूपण्डूक की भांति अपने कुएँ की परिधि में ही पड़े रहते हैं। यही लोग सांप्रदायिकता को प्रोत्साहन देकर मज़हब की दुहाई देते हुए ताना-बाना बुनने में तल्लीन रहते हैं।

संसार का वातावरण बदल गया है। यह अब जनतन्त्र के उषाकाल में प्रविष्ट हो पोषण प्राप्त कर रहा है। साथ हीसंसार में एक नयावाद "विश्वबन्धुत्ववाद" परिपुष्ट हो रहा है जिसका जन्मदाता आर्य समाज रहा है। ऐसी संस्था का सांप्रदायिकता से तो क्या उसकी छाया से भी संबन्ध नहीं हो सकता। जब सांप्रदायिकता को ही आर्य समाज में स्थान नहीं तब इसकी जन्मदात्री पक्षपातता को क्या स्थान मिल सकता है ? सांप्रदायिकता अपनी मौत आप समाप्त हो के ही रहेगी।

आर्य समाज जैसी सार्वभौमिक मानवतावादी संस्था को भी कुछ लोग साम्प्रदायिक समझते हैं। वह इसलिए समझते हैं कि या तो उन्हें वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं अथवा समाज के नाम पर सामप्रदायिकता को बढ़ावा देना चाहते हों। आश्चर्य तो उस समय होता है जबकि उच्कोटि के विद्वान् व्यक्ति भी आर्य समाज पर सांप्रदायिक होने का आरोप लगातेहैं। बहुधा यह वह व्यक्ति होते हैं जो वास्तविकता की अपेक्षा नीति पर अधिक बल देते हैं। यदि दिन के प्रकाश में किसी को सूर्य ही न दीखे तो इसमें सूर्य का क्या दोष हो सकता है।

आर्य समाज आरम्भ से ही समाज सुधार के कार्यों में आग्रणी रहा है और जो संस्थाएँ इस दिशा में प्रयत्नशील रहीं उन्हें भी वह यथोचित सहयोग देता रहा है। भारत की राजनीति में इसका व्यक्तिगत रूप में बहुत बड़ा भाग रहा है। वैसे भी स्वाधीनता संग्राम में पंजाब केसरी श्री लाला लाजपतराय जी तथा श्री स्वामी श्रद्धानंद जी जैसे आर्य वीरों ने बढ़-बढ़ कर भाग लिया। इतना ही नहीं बल्कि हज़ारों और लाखों आर्य समाजियों ने देश और जाति के लिए कार्य किया है। इनके त्याग और बलिदानों से सदैव ही राष्ट्रीय आंदोलनों को बल प्राप्त होता रहा है और अग्रणी नेतां की श्रेणी में आर्य समाजी स्थान प्राप्त कर डटे रहे। स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत भी कांग्रेस का साथ देने और इस राष्ट्रीय संगठन को सुदृढ़ बनाने में आर्य समाजी आगे ही रहे हैं। आज भी राष्ट्र-निर्माण संबंधी कार्यो में आर्य समाज और इस के कार्यकर्त्ताओं का प्रमुख भाग है। जब भीदेश और जाति का प्रश्न आया आर्य समाजी अग्रणी रहे। यदि इनका उल्लेख किया जाए और उद्धरण प्रस्तुत किए जायें तो एक बृहद काय ग्रंथ ही बन जायेगा। किंतु इस संक्षिप्त लेख में केवल यही दर्शाना अभीष्ट है कि आर्य समाज संप्रदायवादी संस्था नहीं है और न ही इसका सांप्रदायिकता से दूर का सम्बध हो सकता है।

मानव-निर्माण में शिक्षा और संस्कारों का सम्बन्ध

-पं. जगदीश चन्द्र ''वसु''

मानव निर्माण करना, अथवा मानव को मानव बनाना वैदिक-धर्म का प्रधान अंग हैं। हमारे जीवन पर शिक्षा, और संस्कारों का गहरा सम्बन्ध होता है जब बालक पैदा होता है तो पिछले जन्मों के कर्मानुसार उसके आत्मा ने कई प्रकार के संस्कार विद्यमान रहते हैं, उत्तम शिक्षा मिलने पर उसका मन शुद्ध हो जाता हैं। यदि ऐसा न हो तो उसका चित्त और मलिन हो जाता हैं, अतः यह जरूरी हैं कि बालक की उचित शिक्षा पर विसेष ध्यान दिया जाये। बालक की आधार शिला माता अपने गर्भ में रखती हैं। वह गर्भस्थ बच्चे को जिस प्रकार के संस्कार दे देगी, वैसा ही वह आगे बनेगा। वहीं संस्कार उसकी मुख्य प्रकृति या प्रवृत्ति बन, उसका जीवन-पर्यन्त संचालन करती रहेगी। उदाहरण के लिये- जिस प्रकार पृथ्वी माता अपने गर्भ में जिस वस्तु को सोना, लोहा, कोयला, हीरा आदि बना देगी, उसके मूल गुण को फिर संसार का कोई भी वैज्ञानिक नहीं बदल सकता। इसी प्रकार माता अपने गर्भ में जिस बालक को- सात्विक, राजसिक, व तामसिक प्रकृति प्रदान कर देगी, फिर कोई भी आचार्य (गुरु) उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता। हां वृद्धि कर सकता है।

गर्भवती माता जैसा खाती हैं, पीती है सोंचती, देखती व सुनती है- उन सबका प्रभाव माता के गर्भस्थ बच्चे पर पड़ता हैं। वास्तव में यही समय मानव के निर्माण में महत्त्वपूर्ण समय होता है जो मां के आचरण पर ही निर्भर करता है।

जन्म लेने के पश्चात् पांच वर्ष की आयु तक ही मां वास्तव में बालक की गुरु होती है- ये पांच वर्ष भी निर्माण की दृष्टि से बड़े ही महत्त्वपूर्ण होते है। बालक कैसे-बैठे, उठे, चले आचरण करें, यह सब माता पर निर्भर करता हैं। यदि माता शुशिक्षित है तो वह इन पांच वर्षो में ही बालक को सुपथ पर चला देती हैं। इस आयु में माता के अतिरिक्त बालक का निर्माण कोई नहीं कर सकता। माता के हृदय में बालक के लिये आगाध प्रेम होता हैं। बालक काला, कुरुप, अपंग, कैसा भीक्यों न हो, माता के हृदय में उसके लिये प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। आज कल जो माता-पिता इस आयु में बालक को नौकर घर के कर्मचारियों आदि के हवाले करके स्वयं अन्यकामों में लगे रहते हैं या स्वयं सैर-सपाटे करते-फिरते हैं वे बालक काजीवन ही बिगाड़ देते हैं वैदिक-धर्म में माता का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य ''सन्तान का निर्माण'' ही माना हैं। ऐसा करने में ही उसका अपना और राष्ट्र दोनों का ही कल्याणहोता हैं।

वैदिक-धर्म ने मानव को मानव बनाने का आधार सोलह संस्कार को करने का विधान बताया हैं-जो गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त किये जाते हैं। जो मनुष्य की सम्पूर्ण आयु में फैले हुये। ये संस्कार ही मानव को मानव बनाने में सहायक होते हैं। जैसे भी संस्कार मिलते हैं, वैसे ही विचार ेर कर्म बन जाते हैं,- वास्तव में अच्छे-बुरे संस्कारों की उपज ही मानव का व्यक्तित्व होता है। संस्कार हीन व्यक्ति बेपैन्दी का लोटा है जो इधर-उधर लुढकता रहता हैं, परन्तु एक संस्कारी व्यक्ति की दिशा व कर्म-पूर्व निश्चित होते हैं, और देश काल परिस्थिति से उत्पन्न हवा के झोके उसे पथ-भ्रष्ट नहीं कर पाते। इसीलिये हम समझते हैं कि बालक अबोध होता हैं। विचारकों का माता-पिता करते हैं, उसका प्रभाव बालक के मन-मस्तिष्क पर पड़ता है। हमें बड़ी सावधानी से बालक को शिक्षा देनी चाहिये, ताकि वह बड़ा होकर- चरित्रदान- सदाचारी, नागरिक बन सकें। अच्छा हो, यदि छोटे बालकों के सामने हम ऐसा व्यवहार न करे संस्कार उत्पन्न हो ? संस्कारों का प्रभाव बहुत प्रबल होता है। यदि ध्यान न दिया जाये तो एक ही कुसंस्कार हमारे पतन का कारण बन सकता हैं। आज संस्कार में इतनी घृणा, ईर्ष्या, और हिंसा क्यों है ? इसका मूल कारण संस्कार है। मनुष्य अच्छे-बुरे मार्ग की ओर प्रवृत्त संस्कारों से ही होता हैं। महाभारत का उदाहरण हमारे सन्मुख है :-

महाभारत के युद्ध को रोकने के लिये- योगेश्वर श्रीकृष्ण ने हर सम्भव प्रयत्न किये, दुर्योधन से मिले, बड़ा समझाया, परंतु कृष्ण की एक बात भी दुर्योधन ने नहीं मानी, धर्म का उपदेश देकर जब कृष्ण दुर्योधन को समझाते हैं तो दुर्योधन कृष्ण को सम्बोधित करते हुये कहता है कि-

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति।
जानाम्य धर्मं न च में निवृत्ति॥
के नाऽपि देवेन हृदि संसस्थितेने।
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥

महाराज ! मैं धर्म को अच्छी तरह से जानता हूँ कि धर्म क्या है परंतु मेरी धर्म में प्रवृत्ति नहीं है और अधर्म को भी मैं अच्छी तरहसे समझता हूँ कि ? अधर्म क्या है, जिस पर चलने से मनुष्य का सर्वनाश हो ाता है। परंतु उससे मेरी निवृत्ति हैं- ''यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि'' जिधर वहसंस्कार मुझे नियुक्त करते (प्रेरित करते है) उधर मुझे झुकना पड़तहै, मैं क्या करूँ, इसमें मेरा दोष नहीं यह सब संस्कारों की बात है। इसलिये मनुष्य जीवन में जो कुछ भला-बुरा करता हैं, अथवा प्रेरित होता हैं। वह सब संस्कारों के कारण ही होता है इसलिये मनुष्य को संस्कारों के महत्त्व को समझते हुयें, अपने अमूल्य मानव जीवन को कल्याण, कारी मार्ग पर ले जाता हुआ इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख को प्राप्त करे।

हमारे ऋषि-महिर्षियों तथा मनीषियों ने संस्कारों के प्रति सचेत रहने को कहा हैं। मानव हर वक्त देखे कि-वह क्या सोच रहा है ? जैसे हमारी सोच-विचार होगी, वैसा ही हमारा भाग्य का निर्माण होगा, हमें प्रयत्न करना है कि-हमारे संस्कार अच्छे-उत्तम हों, ताकि हमारा भविष्य उज्ज्वल हों। इतिहास बताता है कि अनेकों महापुरुष अपने माता-पिता गुरुजनों की कृपा से ही जीवन में सफल हुये हैं।

भारत के वर्तमान राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने अपने जीवन

-शेष पृ. ५ पर

जीवन का नाम है गति

-स्वतंत्र वार्ता

ज्ञान और कर्म का परस्पर संबंध है । इसलिए मानव जीवन में दोनो का संतुलन बनाए रखे तो हमारा जीवन व्यवस्थिति हो जाता है ।

ज्ञान आंख है और कर्म पांव है । आंख से देखो और पांव से चलो, बिना देखे चलना कुएं में गिरना है । सिर्फ चलना ही बाकी रहे, देखा न जाए तो वह चलना व्यक्ति को चोटे पहुंचाएगा और अगर चले नहीं केवल देखते ही रहेतो फिर उस देखने का भीकोई लाभ नहीं । इसलिए दोनों का तालमेल जीवन में जरूरी है ।

शरीर में ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां दोनो हैं-ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त होता है और कर्मेन्द्रियों से कर्म । दोनों का होना ही जीवन है । ज्ञान भी चाहिए और कर्म भी चाहिए । पक्षीके दो पंख हैं । एकपंख से उड़ा नहीं जा सकता । किसी रथ का एक पहिया हो तो रथ चल नहीं सकता । ऐसे ही ज्ञान के बिना कर्म नहीं हो सकता और कर्म के बिना व्यक्ति को ज्ञान नहीं हो सकता । ज्ञान और कर्म के बिना व्यक्ति एक क्षण भी नहीं रह सकता । प्रकृति ने हमें बनाया ही ऐसा है कि हम हर समय कर्मशील रहे कर्म के बिना कही ठहरा नहीं जा सकता । कर्म हमारे स्वभाव में उतर आया है ।

व्यक्ति कितना भी खाली बैठे तो भी वह खाली नहीं बैठ सकता । कुछ-न-कुछ जरूर करेगा । बच्चों के अंदर आप देखते हैं-उनका रोम-रोम कर्म से जुड़ा हुआ होता है, वे कहीं चैन से नहीं बैठ सकते-वे हिलेंगे, डुलेंगे, चलेंगे । अगर व्यक्ति चुपचाप बैठा रहे तो मन चलता रहेगा और मन भी न जाने कहां तक लेकर जाता है । एक क्षण भी हम खाली नहीं बैठ सकते ।

कर्म तो जीवन के साथ है । रुकना नहीं है, चलते रहना है-तैत्तिरेय ब्राह्मण का उपदेश है- **''चरन् वै मधु विन्दते''** जो चला है, उसी ने जीवन का माधुर्य प्राप्त किया है । **'चरन् स्वादुसुदम्बरम्'** चलने वालों ने ही जीवन का मीठा, स्वादिष्ट फल पाया हैं ।

सूर्य गतिमान है । संसार को प्रकाशित करता है । चन्द्रमा की शीतलता से संसार रसपूर्ण है । चन्द्रमा की शीतलता से संसार रसपूर्ण है । सतत् प्रकाशित एवं रसपूर्ण होने के लिए **'चरैवेति-चरैवेति** सूत्र को जीवन में उतरना होगा । चलते रहो, कर्म करते रहो, रुको नहीं ।

प्रकृति का नियम है कि हर कोई गतिमान है । चींटियों को देखिए । छोटी-सी-चींटी अंधेरे में भी दौड़ी चली जा रहा है । अचानक आप लाईट जलाते हैं देखकर आश्चर्य होता है कि अंधेरे में भी चींटियां दौड़ी जा रही हैं ।

रात काफी हो चुकी है, पर उन्हें सोने नहीं जाना । शरीर से ज्यादा सामान उठाकर जा रही होती हैं । उनका 'वन वे ट्रैफिक' चलता है । एक तरफ जाने का रास्ता हैतो दूसरी तरफ आने की व्यवस्था कर रखी है ।

सूर्य गतिमान है । संसार को प्रकाशित करता है । चन्द्रमा की शीतलता से संसार रसपूर्ण है । सतत् प्रकाशित एवं रसपूर्णहोने के लिए चरैवेति-चरैवेति सूत्र को जीवन में उतरना ही होगा । चलते रहो कर्म करते रहो, रुको नहीं । प्रकृति का नियम है कि हर कोई गतिमान है । छोटे से जीवन को भी पता है कि कर्म करते रहना है । खाली नहीं बैठना है । वस्तुतः जीवन गति का नाम है ।

कहीं दोनों तरफ का मार्ग 'टू वे ट्रैफिक' भी चलता है । चींटियां बहुत तेजी से भागे जा रही हैं । लेकिन एक्सीडेंट बिल्कुल नहीं होता ।

बीच-बीच में प्रहरी खड़े हुएहैं, वे व्यवस्था देख रहे हैं । जो निरीक्षण कर रहे हैं, वे देख रहे हैं कि व्यक्ति के पास यदि सामान ज्यादा है तो दौड़कर जाएंगे उसका साथ देंगे ।

छोटे से जीवन को भी पता है कि कर्म करते रहना है । खाली नहीं बैठना है । वस्तुतः जीवन गति का नाम है ।

कर्म करो पर सुव्यवस्थित होकर ।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयानापि च ते न
प्रसिद्ध्येदकर्मणः ।।

शरीर की यात्रा तभी ठीक रहती है, जब कर्म से जुड़े रहते हैं । यदि कर्म से विमुक्त हो गे तो जीवनयात्रा ठीक से चलने वाली नहीं है ।

कर्म नियत एवं मर्यादित होकर करना । कर्मों में कभी उलझ नहीं जाना । कर्म से कर्म का काटना, कर्म से कर्म के बंधन में नहीं आना । पांव में लगे कांटे को कांटे से निकालिए । फिर दोनों ही कांटों को उठाकर फेंक दीजिए । कर्म से कभी काटते चले जाएं, बन्धनों को तोड़ते चले जाएं और परमात्मा की ओर अपने कदम बढ़ते जाएं, यही श्रीकृष्ण का मानव जीवन के लिए संदेश है ।

कर्म की भी प्रतीक्षा होती है यदि थोड़ा-सा कर्म करके बैठ जाएं तो बात बनने वाली नहीं है । जैसे यज्ञोंका अपना विधान है ।

कौन-से यज्ञ में कितना आहुति देनी है, उसका विधान हैं । ऐसे ही प्रत्येक कर्म का भी एक संविधान है । कर्म एक यज्ञ है, उसमें कितनी आहुति देनी पड़ेगी, कितने पसीनेकी बूंदे डालनी पड़ेंगी, कितनी मेहनत करना पड़ेगी ।

यह निश्चय अवश्य करें । उनतनी देर तक थके नहीं, हारे नहीं और घबराए भी नहीं । अपना कर्म ज्ञानपूर्वक करते जाएं इस तरह कर्म में कुशलता आने से दुर्भाग्य दूर हटकर सौभाग्य सामने आ जाता है ।

एडीसन बहुत बड़े वैज्ञानिक थे । उका पूरा नाम था-थॉमस एल्वा एडीसन । एडीसन ने जॉर्ज को बुलाकर उन्होंने कहा-जो मैं ग्रामोफोन तैयारकर रहा हूं, इसमें एक मशीन की औरजरूरत पड़ रही है, आवाज जब ऊंची-नीची होती है तो उसका संतुलन एवं नियन्त्रित करना, बड़ा मुश्किल हो जाता है । अतः तुम थोड़ा इस परकाम करो, उसे उन्होंने काम दे दिया ।

काम देकर अपने सहायक से कहा-धैर्य सेकाम करना घबराना नहीं । हरकाम समय मांगता है । आपकी लगन, आपकी निष्ठा मांगता है । तुम्हें लगन लगन और निष्ठा से लगना पड़ेगा । हर काम का अपना एक

समय होता है-कोई फल जरा जल्दी पक जाते हैं, तो कुछ को पकने में देर लगती है । कुछ पेड़ों के फल जल्दी प्राप्त हो जाते हैं तो कुछ के लिए देर तक रुकना पड़ता है ।

जॉर्ज को बात समझ में आ गई । एक साल तक तो उसने पूरी मेहनत की, पर परिणाम कुछ नहीं निकला । उसने दूसरे साल फिर मेहनत की, तब भी कोई परिणाम नहीं निकला । दो साल जब पूरे हो गए तो वह घबराकर वापस आया और एडीसन के सामने हाथ जोड़कर बोला-मैं घबरा गया हूं, मेरी जिंदगी के दो कीमती साल दे बेकार गए, कोई परिणाम सामने नहीं आया ।

आपने मुझे किस काम में लगा दिया । यह कोई काम है ? मेरे से योग्य जो कोई आदमी हो, उसे आप चुन लेना, मैं तो दो साल अपनी जिंदगी के तबाह करके दुःखी हूं ।

एडीसन ने उसका इस्तीफा तो लिया पर फाडकर फेंक दिया और कहा- ''एक बात ध्यान से सुनो । भगवान ने अगर दुनिया में कोई समस्या दी है तो उस समस्या का समाधान भी दिया है । कोई-न-कोई उसे खोजेगा जरूर । किसी-न-किसी ने तो उसे खोजना ही है । उसका समाधान तो निकालना ही है ।

समाधान एक नियत समय पर ही निकलेगा । हो सकता है तुम्हारी मंजिल तुम्हारे नजदीक हो । थक-हारकर क्यों बैठ गए हो ? इतनी दूर तक चलकर आ गए हो, हो सकता है किनारा सामने ही हो । फिरसे बैठो और फिर से अपना कर्म शुरू करो ।''

जार्ज फिर से बैठा औरकुछ समय के बाद उसे सफलता मिल गई । तब वह चहकता हुआ, मुस्कुराता हुआ वापस आया तो ऐडीसन उसकी तरफ देखकर कहता है- 'क्यों ? अगर उस समय घबराकर भाग जाते तो क्या तुम इतनी बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते थे? घबराने वालों को कभी कुछ नहीं मिलता ।'

इस संसार में सफलता उन्हीं को मिलती है, जो निष्ठा पूर्वक कर्मो को सम्पन्न करता है और संसार में सफल होने का भी यही विज्ञान है ।

...पृ. ३ का शेष

के सम्बन्ध में कहा है कि ''हर बालक एक विशेष, आर्थिक, सामाजिक, और भावनात्मक परिवेश में कुछ वंशानुगत गुणों के साथ जन्म लेता है । फिर संस्कारों के अनुरूप उसे ढाला जाता है । मुझे अपने पिता जी से विरासत के रूप में ईमानदारी और आत्मानुशासन मिला तथा माता से ईश्वर में विश्वास और करुणा का भाव, यहीं गुण मेरे तीनों भाई-बहनों को भी विरासत में मिले, बचपन में मेरे तीन पक्ते दोस्त थे- रामानन्द शास्त्री तो रामेश्वरम् मन्दिर के सबसे बड़े पुजारी लक्ष्मण शास्त्री का बेटा था । अलग-अलग धर्म, पालन-पोषण, पढाई-लिखाई को लेकर हममें से कोई भेदभाव महसूस नहीं किया । जब मैं रामेश्वरम् के प्राईमरी स्कूल में पांचवी कक्षा में था, तब एक दिन एक नये शिक्षक हमारी कक्षा में आये, मैं टोपी पहना करता था, कक्षा में मैं हमेशा आगे कीपंक्ति में जनेऊ पहने रामानन्द शास्त्री के साथ बैठा करता था । नये शिक्षक को एक हिन्दू लड़के का मुसलमान लड़के के साथ बैठना अच्छा नहीं लगा । उन्होंने मुझे उठाकर पीछे वाली बैंच पर चले जाने को कहा, मुझे बहुत बुरा लगा, रामानन्द शास्त्री को भी यह बहुत खला । स्कूल की छुट्टी होने पर हम घर गयें, और सारी घटना अपने घर वालों को बताई । यह सुनकर लक्ष्मण शास्त्री ने उस शिक्षक को बुलाया और कहा कि उसे निर्दोष बालकों के दिमाग में इस तरह सामाजिक असमानता एवं साम्प्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिये । हम सब भी वहां मौजूद थे । लक्ष्मण शास्त्री ने उस शिक्षक से साफ-साफ कह दिया कि-या तो वह क्षमा मांगे या फिर स्कूल छोड़कर यहां से चला जाये । उस शिक्षक ने अपने किये किया-बल्कि लक्ष्मण शास्त्री के कड़े रुख एवं धर्म निरपेक्षता में उनके विश्वास से उस नौजवान शिक्षक में अंततः बदलाव आ गया'' । यह घटना हैं जो हमें उत्तम संस्कारों की ओर प्रेरित करती है । यह किसको पता था कि यह होनहार बालक अब्दुलकलाम एक दिन महान वैज्ञानिक एवं भारत का राष्ट्रपति बनेगा । ऐसे ही उत्तम संस्कार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बाबू, सर्वपल्ली राधा कृष्णन्, शंकर दयाल शर्मा, लाल बहादुर शास्त्री, सुभाषचन्द्र बोस, पं. जवाहर लाल नेहरू स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज आदि अनेको इस आर्यावर्त देश में दिव्य आत्मायें हुई जिन्होंने उत्तम संस्कारों के द्वारा राष्ट्र निर्माण में महान योगदान दिया ।

हमें भी उनके विचारों को अपना कर आगे बढ़ना हैं और वैयक्तिक परिवाहिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीयता को ऊँचा उठाना हैं । यह शिक्षा एवं संस्कारों के द्वारा ही सम्ब' है । महापुरुषों का जीवन ही हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है । हमारे मन का अन्धकार उनकी ज्ञानरूपी ज्योति से दूर होसकता हैं । शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन जरूरी हैं । हमें नैतिक मूल्यों पर बल देना होगा । भारत के समस्त विद्यालयों में नैतिक-धर्मशिक्षा मुख्य विषय के रूप में अवश्य ही होना चाहिये, सभी मत-मतान्तरों के मूल सिद्धान्त एकजैसे ही हैं । उन पर पहले शिक्षक को चलना हैं । शिक्षक जो करता है विद्यार्थी भी वैसा ही करता है । अपने बालकों को सिनेमा और टी.वी. के उन कार्यक्रमों से दूर रखना चाहिये-जिनको देखने से उनके चरित्र बिगड़ सकते हैं । ''धर्मों रक्षति रक्षितः'' यह सत्य है कि इस धर्म पारायण देश में अनादि काल से संस्कारो की महता उजागर की गई हैं । हमारे ऋषि महर्षि आदि ग्रन्थ वेदों के द्वारा सदैव ही यह उपदेश देते रहे है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जितने संस्कार-कर्त्तव्य हैं उन्हें अपने जीवन का आधार बनाना चाहिये । हमारे पूर्व आचार्यों ने मल विक्षेप और आवरण से छुटकारा पाने के कई साधन बताये है- पर उनका आधार-भूत सर्वोत्तम उपाय यही है कि हमारी शिक्षा-दीक्षा, ठीक प्रकार से हो, और हमारा घर परिवार उत्तम संस्कारों से सम्पन्न हो । संस्कारों का अनुपालन मानव-जीवन के अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हमें १६ वीं शताब्दि के महान क्रान्ति-कारी, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द कृत ''संस्कार-विध'' को आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिये मानव-निर्माण में इन सोलह संस्कारों का बड़ा भारी प्रभाव पड़ताहै ।

आर्यो ! हम मानव निर्माण कर आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति में सहायक बनें ।

-वेद प्रचार अधिष्ठाता-पानीपत
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
हरियाणा/दिल्ली

कमल-सा बनाओ अपने जीवन को

-पं. जगदीश चन्द्र

भगवान दत्तात्रेय में भंवरे को अपना गुरु माना है । भंवरे से उन्हें एक बात समझ में आई कि भंवरा कमल में आसक्ति के कारण बंद हो जाता है । कभी-कभी भंवरा कमल में बंद होकर हाथी के पांव के नीचे कुचल कर मर भी जाता है । इससे ज्ञात होता है कि भंवरे में शक्ति तो है । उसके पास इतना डंक तो जरूर होता है कि वह लकड़ी को काटकर बाहर निकल जाए । लेकिन आसक्ति में बंधने से उसकी दशा क्या होती है ? वह कमल में फंसकर हाथी के पांव से कुचल दिया जाता है ।

इंसान को अगर यह बात समझ में आ जाए कि उसमें इतना सामर्थ्य है कि कोई भी ऐब, कोई भी व्यसन था कोई बुरी आदत उसे बांध नहीं सकती । अगर मनुष्य ललकार कर खड़ा हो जाए, तो हर जंजीर को तोड़ सकता है, लेकिन मनुष्य सोचता ही नहीं, आसक्ति में पड़ा हुआ है । भंवरा भी यही समझ रहाहै कि आसक्ति से बढ़कर दुनिया में कोई बंधन नहीं है । अगर विवेक जाग जाए और इंसान चुनौतियों से लड़ने की सामर्थ्य जगा ले, तो हर आसक्ति के बन्धनों को तोड़ा जा सकता है ।

मनुष्य में यही कमजोरी है कि वह आसक्ति में बंधता जाता है । अगरकोई लोहे की जंजीर गले में डाली जाए,तो कितनी पीड़ा होती है । कोई बंधना पसंद नहीं करता है, लेकिन सोने की जंजीर किसी आदमी के गले में डाल दीजाए औरकहा जाए, कि यह बंधन आपके लिएहै, तो वह हाथ जोड़कर कहेगा कि ऐसा बंधन रोज-रोज डाला कीजिए ।

इसलिए महापुरुष कहते हैं, कि संसार को देखने के लिए दो तरह की दृष्टियां हैं । एक अपेक्षा दूसरी उपेक्षाकी दृष्टि । अपेक्षा होती यह है, जैसे आप सत्संग स्थल तक चलकर आते हैं, जैसे आप सत्संग स्थल तक चलकर आते हैं, तो रास्ते में कई मकान देखते हैं, जब आप मकान देखते हैं, तो कोई मकान ऐसा भी होता है, जहां आपकी नजरें ठहर जाती हैं । आप सोंचते हैं कि मकान बनाने का अगर मुझे मौका मिलेगा तो मैं भी ऐसा ही मकान बनाऊंगा । बहुत अच्छे ढंग से इस आदमी ने बनाया है । आपने यह सब अपेक्षा की दृष्टि से देखा है, इसलिए आध्यात्मिक सभा में बैठने के बाद भी मकान आँखो में घूमता है । किसी नए मॉडलकी चलती हुई गाड़ी देख ली तो मन में उसकी अपेक्षा होगी, सत्संग में भी बैठे-बैठे गाड़ी का ध्यान आएगा । किसी महिला ने अगर शो-रूम में कोई अच्छा आभूषण या साड़ी देख ली हो तो उसके मन में उसकी इच्छा बैठ जाएगी ।

इसके विपरीत अगर आप उपेक्षा से देखेंगे तो इच्छा पैदा नहीं होगी । इसिलिए तो कहते हैं, कि कमल की तरह दुनिया में रहना सीखिए । तभी तो हमारे देश में कमल को इतना महत्व दिया गया है । महान पुरुषों के अंगो का वर्णन, उनकी शोभा, उनकी सुन्दरता का वर्णन करना हो, तो कमल की उपमा से करते हैं ।

न भगवान को भूलना, न संसार को भूलना, कमल की जड़ नीचे है, लेकिन वास ऊंचाई पर है । तुम संसार के व्यवहार में भी रहना, लेकिन ध्यान ऊपर लगाए रहना, कमल बनकर जी सकते हो तो शोभायमान हो जाओगे । कमल भगवान को अर्पित करना सबसे शुभ होता है । भगवान को प्रसन्न करने के लिए कमल अपर्ण किया जा सकता है । कमल जैसी जिसकी जिंदगी है, वही भगवान को अर्पित हो, तो अच्छा है ।

उन्होंने अपने मुख से ऐसा कहा, तो मुख से नहीं कहेंगे, उन्होंने मुखारविन्द से कहा, अरविन्द का अर्थ है कमल । उन्होंने अपनी आंखो से देखा कमलनयन, आँख के लिए नयन और कमल जोड़ देते हैं । अपने हाथों में उद्घाटन किया । उन्होंने अपने चरण वहां रखे तो कहेंगे, उन्होंने चरणकमल वहां रखे । हर जगह कमल जोड़ रहे हैं । कमलनयन, करकमल, चरणकमल, मुखारविन्द सबमें कमल को जोड़ दिया जाता है ।

कमल का जन्म तो कीचड़ में होता है, लेकिन कीचड़ में पड़ा नही रह जाता । उससे ऊपर उठकर खिल कर दिखाता है । ऊंचा उठ करके शोभायमान होता है । इसलिए कहते हैं कि जन्म तो भले की कीचड़ जैसे स्थान में हो जाए, लेकिन कीचड़ में पड़े रहना शोभा नहीं । कीचड़ से ऊपर उठ जाना, उसी में तुम्हारी शोभा है ।

कमल से एक गुण और है-निर्लिप्त रहना । पानी की एक बूंद भी कमल के ऊपर गिरती है, तो मोती बनकर चमकने लगती है । मोती बनकर चमकने का मतलब है, पानी की बूंद को भी उसे शोभायमान कर दिया है । पानी अगर तालाब में ज्यादा ऊंचाई तक बढ़ जाए, तो कमल उससे ऊपर उठ जाता है ।

दुनिया में इंसान के पास समर्थ्य, शक्ति, धन, वैभव, सत्ता, संपत्ति, सत्कार कितना भी कुछ बढ़ जाए लेकिन इन सबसे ऊपर उठा रहे । इन्हें अपने अन्दर न आने दे । अगर संकार की ये चीजें अन्दर आएंगी, तो अहंकार आएगा । अहंकार आएगा तो दूसरों को दबाने की कोशिश करेगा । तो भगवान से दूर हो जाएगा, अशान्तिका यह भी एक कारण बन जाएगा, संतो की वाणी है-

न दूर भूलो न जग भूलो रहो,
इस तरह जिंदगानी में,
जिस तरह कमल रहता है,
तलाब के बन्द पानी में ।

न भगवान को भूलना, न संसार को भूलना, कमल की जड़ नीचे है लेकिन वास ऊंचाई पर है । तुम संसार के व्यवहार में भी रहना, लेकिन ध्यान ऊपर लगाए रहना, कमल बनकर जी सकते हो तो शोभायमान हो जाओगे।

कमल भगवान को अर्पित करना सबसे शुभ होता है । भगवान को प्रसन्न करने के लिए कमल अपर्ण किया जा सकता है । कमल जैसी जिसकी जिंदगी है, वही भगवान को अर्पित हो तो अच्छा है ।

भंवरा कमल में आसक्ति के कारण पीड़ा भोगता है और कामसकि के कारण हाथी दुःख भोगता है । इसलिए भगवान दत्तात्रेय ने अपना पंद्रहवां गुरु हाथी को माना है । क्योंकि वह कामासक्त होकर, इतना बलशाली होने के बाद भी बंधन में बांधा जाता है ।

विश्व शान्ति का अग्रदूत- अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

-श्रीमती अरुणा सतीजा

सत्यार्थ प्रकाश के प्रमाणिक संस्करणके लेखन के १२५ वे अंतराष्ट्रीय महोत्सव के शुभ अवसर पर सभी आर्य जनों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं । समारिका ''सत्यार्थोदय'' के सबी आयोजकों को आभार सहित धन्यवाद, जिनके अथक परिश्रम से, देश विदेश के विद्वानों एवं सन्यासिवृन्द के वेद आधारित सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश सम्बन्धित उच्च कोटि के विचार दूर दूर तक पहूँचा कर मानव जीवन में पुनः क्रान्ति ला देंगे, जो की समय की मांगहै ।

आज सम्पूर्ण विश्व मृत्यु के भयंकर भय से त्रस्त है । आज किसी का भी जीवन सुरक्षित नहीं है । मृत्यु का ताण्डव नंगा नाच चारों ओर दिखाई देता है । आतंकवाद, नरलवाद, धार्मिक व भाषा की विभिन्नता, जातिवाद, सत्ता की भूख सब से बढ़कर भौतिकवाद आदि समस्याओं ने मनुष्य के जीवन को अशांत कर रखा है एवं एअर कन्डीशन की तण्डी हवा में भी मानव-हृदय रेगिस्तान की रेत की तरह तप रहा होता है ।

आज अमीरी की होड़ है । बड़े बड़े उद्योगपति, होड़ में लाईन लगा कर खड़े है विस्व रिकार्ड में अपनी अमीरी का कीर्तिमान स्थापित करना चाहते है । वह यह भूल जाते है कि अति भौतिकवाद पतन का चिन्ह है । यह मृग तृष्णा है । धन से आनन्द तो क्या सुखकी बी प्रापित नहीं होती । ऐसे वातावरण में स्वामी जी कृत अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश ही वेदों का संदेश दे कर विश्व बन्धुत्व की भावना को जागृत कर सकता है । मानव को मानव जीवन की कला सिखा कर उसे सच्चा मानव बना सकता है, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि से बचा सकता है । आपसी भेदों को मिटा कर प्रेम की ज्योति जला सकता है ।

जिस समय स्वामी जी का भारत भूमि पर अवतरण हुआ था उस समय भी विश्व विशेष कर भारत विषम परिस्थितियों से घिरा हुआ था । लम्बे समय से देश पराधीन था, विदेशी जोक की तरह देश को घूस रहे थे । सभी उद्योग धन्धे नष्ट हो गये थे, किसान व जुलाहे आत्म हत्याएं कर रहे थे । देश छोटी-छोटी रियासतों में बटा था । शासक शौर्यवान होते हुए भी जात-पात के कारण सदा आपस में लड़ते रहते थे जिसका विदेशियों ने भरपूर लाभ उठाया । इस्लाम व ईसाई मिशनरियां येन केन प्राकारेण से हिन्दूओं के धर्म परिवर्तन में जुटी थी । सामाजिक व धार्मिक संकीर्णता के कारण, मजबूरी में जो एक बार धर्म परिवर्तन कर लेता था, वापस लौट कर नहीं आ सकता था । हिन्दू जाति का ह्रास हो रहा था, विदेशी शक्तियाँ निश्चिन्त थी क्योंकि हिन्दूओं के वापस जाने के द्वार सदा सदा के लिये बन्द हो जाते थे ।

ऐसी विकट घड़ी में स्वामी दयानन्द व उनके शिष्य बढ़े और घोषणा की, कि ''धर्म च्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है इतना ही नहीं आहिन्दु भी यदि चाहे तो हिन्दू धर्म में प्रवेश पा सकता है'' इस घोषणा ने भूचाल ला दिया । पौराणिक, मुस्लिम तथा ईसाई मिशनरियां स्तब्ध रह गई।

स्वामी जी ने ऋग्वेद आदि का भाष्य किया अन्य आर्ष ग्रन्थों की रचना की, और उदयपुर पहुंचकर महाराणा के नौलखा महल में इस कालजयी अमर ग्रन्थ की रचना कर भारत के भाग्य का सूर्य उदय कर दिया । अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश ने सबको प्रकाशित कर आर्य जन बना दिया ।

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- ''एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य बनायें बिना भारत का पूर्ण हित होना कठिन है । सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है जहां भाषां भाव और भावना में एकता आ जाए वहां सागर की भांति सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लगते है । मैं चाहता हूँ देश के राजा महाराजें अपने शासन में सुधार और संशोधन कर अपने राज्य में धर्म भाषा और भावों में एकता करें फिर भारत में अपने आप सुधार हो जाएगा ।''

उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने वेदों को आधार बनाया, उन्होंने अनुभव किया वेद ही मानव जीवन का आधार है जिन्हें हम भुला चुके है । उन्होंने वेदों को मांजा, शताब्दियों से उन पर जमी मैल को उतारकर उनका सत्य स्वरूप लोगों के सामने रखा और सिंहनाद किया- ''वेदों की ओर लौट चलो'' यही सरता है सुख और शान्ति का, जो आनन्दका धाम, मोक्ष का द्वार है ।''

वेद आधारित सत्यार्थ प्रकाश गंरथरत्न की सरल भाषा में रचना कर इसके माध्यम से समाज में व्याप्त प्रत्येक बुराई पर चतुर कारीगर की तरह हथौड़े और छेनी की चोट की ।

उन दिनों देश अंग्रेजों के आधीन था ७०० वर्षों तक मुसलमान शासन कर चुके थे । परतंत्र रहना लोगों के स्वाभाव में आ गया था । व्योमेशचन्द बनर्जी ने महारानी विक्टोरिया के स्वागत में अपने अध्यक्षीय भाषण में घोषणा की कि अंग्रेजी शासन ने हमें शान्ति और व्यवस्था दी, रेल व अन्य सुविधाएँ दी, सबसे बढ़ कर शिक्षा का वरदान दिया । चारों और महारानी की जय जय कार हो रही थी । कांग्रेस ने अपने अधिवेशन में जार्ज पंचम को long live the king का आशीर्वाद दिया । ऐसी विपरीत परिस्थितियों में स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा-

''विदेशी शासन कितना अच्छा हो पर स्वराज्य से नहीं''

विदेशी शासन के विरुद्ध इसरो अधिक निर्भीक घोषणा क्या हो सकती है ।

यह एक मेधावी एवं जुझारू यौद्धा की वाणी थी जिसने अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हिला कर रख दिया । हमारा सब कुछ पराया था । अपना कहने को कुछ भी नहीं था । भारतीय बड़ी जिल्लत की जिन्दगी जी रहे थे । स्वामी जी ने अनुभव किया ''हीन भावना से ग्रस्त कोई व्यक्ति समाज ौर राष्ट्र उपर उठने

की सोंच भी नहीं सकता ।''

तभी मैक्डानल की गर्व भरी बातों का उत्तर देते हुए स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखा- ''यह आर्यावर्त ऐसा देश है जिसके सदृश विश्व में कोई दूसरा देश नहीं इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है क्योंकि यही स्वर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है । आर्यावर्तदेश ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते ही धनाढ़य हो जाते है । सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर पांच सहस्त्र वर्षो से पूर्व पर्यनत आर्यो का सार्वभौमिक चक्रवर्ती भूगोल में एक मात्र राज्य था अन्य सब छोटे-छेटे राज्य थे ।

अद्वितीय ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का, जैकालिय जो एक फ्रांसीसी था, पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि ''बाइबिल इन इंडिया'' में उसने लिखा कि सब ''विद्या और भलाइयों का भण्डार आर्यवर्त देश है सब विद्या और मत सब इसी देश से फैले हैं'' परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्व काल में थी वैसी हमारे देश की कीजियें । कितना मनोबल बढ़ा होगा भारतीयों का, स्वाभिमान से सीना तन गया होगा । मैक्समूलर परस्वामी जी के आर्ष ग्रन्थों का इतना प्रभाव पड़ा कि पढ़ने के बाद वह अपने प्रशासकों को भारत बेजते समय कहते थे तुम्हें अच्छा लगे या बुरा वास्तव में सच्चाई यही है कि ''मानवता के इतिहास की बहुमूल्य एवं निर्देशक सामग्री भारत भूमि में संचित है। इस क्रान्तिकारी ग्रंथ ने इतिहास के पन्नों को उलट कर रखा दिया'' तभी सरदार वल्लभ भाई पटेल कह उठे-

भारत की स्वाधीनता की नींव रखने वाला वास्तव में स्वामी दयानन्द ही पहला व्यक्ति था ।''

डॉ. एनीबेसंट ने समर्थन करते हुए लिखा- ''जय स्वाधीन भारत का मंदिर बनेगा तो उसमें स्वामी दयानन्द की मूर्ति की वेदी सब से ऊँची होगी ।'' स्वामीजी ने भ्रम को दूर करते हुए इस बात को सिद्ध कर दिया कि आर्य आर्यावर्त देशके ही मूल वासी है इन से पूर्व इस भू-भाग पर कोई भी निवास नहीं करता था ।

भारतीय जन मानस न वर्ण के अर्थ को समझ रहा था न ही व्यवस्था पर विचार कर रहा था । महर्षि ने हुंकार लगा कर कहा जिसे तुम वर्ण व्यवस्था समझें बैठे हो यह वेद विरुद्ध जाति-पांती है । यह मरण व्यवस्था है । मानव जाति में सब एक दूसरे के अंग है । यह सत्यार्थ प्रकाश का ही प्रभाव है कि अब देश विदेश के विचारक व लेखक ही घोषणाएँ कर रहे हैं कि वेद में जाति-पांति नहीं है । श्री अनवर शेख ने स्पष्ट लिखा-

कोई वेदों में नहीं है जांत-पांत, यह सियासत दान की जादूगरी है ।

एक फारसी के कवि ने भी लिका है-

बनी आदम अज़ाय यक दिगरन्द

अपितु मानव जाति सब एक है ।

बुद्धदेव जी विद्यलंकार के श्बदों में वेद का जादू संसार के सिर चढ़ कर बोल रहा है । और लिखा ।

''बांट कर रखे तुम्हें कहते हैं जिसको जात पांत''

डॉ. अविनाश चन्द जी बोस समर्थन करते हुए लिखते है Brahman is made not born.

उन दिनों पाप पुण्य, एक समस्या बनी हुई थी पाप औरपुण्य मनुष्य नहीं करता बल्कि शैतान करता हैं और कही कहीं यह भी भ्रम था जो कुछ करता कराता है वह भगवान है इस लिये मनुष्य का कोई दायित्व नहीं ।

महर्षि ने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में एक बड़ी सूक्ष्म दार्शनिक सच्चाई का प्रकाश कर संसार में हल चल मचा दी ।

मनुष्य का आत्मा सत्य असत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्या आदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है ।

आज सभी न्यायालय विधान आदि इस बात को मानते है कि मनुष्य को अपने कर्मो का दण्ड-फल भोगना ही पड़ताहै इसीलिए मनुष्य का पुनर्जन्म होता है । कर्म फल प्राणी मात्र के लिए अनिवार्य है । इसी के आधार पर ही स्वर्ग और नरक की प्राप्ति होती है । परंतु पुराणों का स्वर्ग, बाइबल व कुरान का स्वर्ग तो स्थान विसेष पर है जहां भोग विलास की सामग्री मिलती है । अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में बताया गया कि सुख विसेष का नाम स्वर्ग और दुःख विशेष का नाम नरक है आज सारा संसार इस सिद्धांत को मानता है । इसाईयों की एक पत्रिका में भी वर्णन आया है कि **''नरक व स्वर्ग आत्मिक अवस्थाएं हैं स्वर्ग प्रभु की उपस्थिति का आनंद है और नरक प्रभु से ज्ञान की दूरी''**

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से लोगों को समझाया कि ईश्वरएक है वह और कहीं नहीं कण-कण में व्याप्त है । तो लोग अल्लाह को सातवें आकाश पर मानते थे उन्होंने भी ईश्वर की सर्वज्ञता को स्वीकार कर लिया है अद्वितीय ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में गुणकर्म स्वभावके आधार पर ईश्वर के १०० नामों का वर्णन है जो उसकी उपस्थिति को सिद्ध करते हैं परंतु स्वामी जी ने कहा उसका मुख्य नाम एक हैं वह है ओ३म् जिसका जाप सभी को करना चाहिए ।

मूर्ति पूजा का भी बहुत बोल बाला था स्वामीजी ने अनेकों प्रमाण दे कर इसका खण्डन किया परंतु जड़ से इसे मिटाने में सफल नहीं हुए । स्वामी जी सुखी व आदर्श गृहस्थ के पक्षधर थे वह विवाह को अनिवार्य मानते थे और ब्राह्य विवाह ही आदर्श विवाह पद्धति है । स्वयंवर के पक्षधर थे उनके अनसार पति पत्नी को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए तभी जीवन सुखी रहेगा । प्रत्येक गृहस्थ को प्रतिदिन पंचमहायज्ञ अनिवार्य रूप से करने चाहिए । चारों आश्रमों के नियमों का पालन करना चाहिए । यदि सभी सत्यार्थ प्रकाश की आज्ञानुसार गृहस्थ जीवन व्यतीत करें तो धरती परस्वर्ग उतर आयेगा । यही संदेश आर्यो को विश्व को देना हैं ।

गृहस्थ जीवन में बच्चों का स्थान महत्वपूर्ण है । संस्कार विधि में स्वामी जी ने १६ संस्कारों का बहुत सुंदर वर्णन किया है ताकि बच्चों का सही वर्णन किया है ताकि बच्चों का सही निर्माण हो सके ।

स्वामी जी ने घर को बच्चे की प्रथम पाठशाला माना है और मां को प्रथम गुरु । आठ वर्ष तक बच्चा घर रह कर मां के आंचल में जीवन की प्रथमिक शिक्षा प्राप्त करे । मां उसे सुसंस्कारों से संवार कर आदर्श चरित्रवान मानव बनने के लिये तैयार कर

-शेष पृ. १६ पर

युवा पीढ़ी का दायित्व

-पं. शिवदयालु

भौतिक सुख समृद्धि में आकण्ठ डुबा पाश्चात्य जगत् आज अपनी मायावी सभ्यता के भार से स्वयं टूट रहा है। यूरोप हो या अमेरिका युवा पीढ़ी का मानस विक्षोभ और विद्रोह ग्रस्त है। लड़क भड़क पूर्ण परिधानों में लिपटे बदन आज प्रायः नग्न होने तथा मूल्यवान वस्त्रों के स्थान पर मोटे, झोटे कपड़ों में तन ढाकने में ही सन्तोष की अनुभूति करने लगे हैं। गगन चुम्बी वातानुकूलित अट्टालिकाएं आज उनके मन में वितृष्णा जगा रही है और हिमाच्छादित शैल शिखरों के प्रति उनकी कशिश बढ़ती जा रही है। टेम्स, वोल्गा और मिसीसिपी की लहरों की अपेक्षा गंगा यमुना की गीलधारा ही उनके मन में अधिक आकर्षण जगा रही है। तात्पर्य यह है कि वैभव और विलास का केन्द्र बनी पाश्चात्य नागरियों से युवा पीढ़ी भारत की ोर भागना चाहती है, भाग रही है। उसके मन में भारत दर्शन की लालसा, भारतीय युवकों के मन में जगी विदेश दर्शन की इच्छा की तुलना में कही अधिक तीव्र हो उठी है। और उसका परिणाम ही है हिमालय की उपत्यकाओं और शिखरों में स्थित नगरियों की सड़क पर भटकती गौरांग युवा पीढ़ी। युवक और युवतियां। सुशिक्षित किन्तु अपनी वेशभूषा से ही उखड़े से लगे वाले।

एक प्रश्न चिन्ह !

इस स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि आज जो भारत अपनी आध्यात्मिक ज्ञान की थाती के कारण विश्व भर की जिज्ञासु युवा पीढ़ी के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन रहा है, उस महान् पुण्यभूमि की गोदी में जन्मी, पली और बढ़ी युवा पीढ़ी क्या जगत् को दिशादान देगी अथवा स्वयं भी उस रपटीली राह पर ही पग बढ़ाएगी, जिससे आज पाश्चात्य युवक लौट रहा है। क्या उस सभ्यता की उतरन को ग्रहण करेगी जिसे यूरोप ने त्यागा है। इस प्रश्न का उत्तर देना तो सरल नहीं। किंतु यह बात निश्चयपूर्वक कही जा सकती है कि यदि युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के सत्य इतिहास, स्वदेश के प्रति गौरव एवं वैदिक ज्ञान गरिमा से संपृक्त हो सकी तो वह मनु के इस उद्‌घोष को चरितार्थ कर सकेगी-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

हाँ. उसे इस ओर प्रवृत्त करने का दायित्व है उन जगदेखे जीवनों का जो युवा मनःस्थिति में आए दिखराव से चिंतित तो है, भटकाय से दुःखी तो है, किंतु युवकों पर अपने जीवन के अनुभवों की थाती को लुटाते, जिन्हें संकोच सताता है। आज कई बृद्धजन युवा पीढ़ी के विरुद्ध नास्तिक हो जाने का फतवा भी अचानक दे बैठते है और स्वकर्त्तव्य की इतना कह देने मात्र में ही इतिश्री मान बैठते हैं। यह वयोवृद्ध पीढ़ी युवक वर्ग को तभी सन्मार्ग दिखा सकती है, जब इस तथ्य को हृदयंगम करले कि 'ईश्वर में विश्वास न करने वाला जितना नास्तिक है, उससे बड़ा नास्तिक वह कि जो स्वयं में विश्वास नहीं रखता।' और इस दृष्टि से हर निराश मन में यह भाव जाग सकता है कि युवा पीढ़ी का मन दिखराव से ग्रस्त भले ही हो किंतु उसे नास्तिक की संज्ञा देना यदि पूर्णरूपेण नहीं तो बड़ी सीमा तक तो निश्चित रूप से हीगलत होगा।

आदर्श आवश्यक और.....

किंतु जहा वृद्धजनों का एक दायित्व है, कहां युवा पीढ़ी का भी यह पावन कर्त्तव्य है कि वह अपनी भटकन को स्वयं ही मिटाने की आस्था अपने मानस में जगाए और यह तभी संभव है जब वह एकआदर्श को समक्ष रखकर कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ हो। क्योंकि उसे स्मरण रखा होगा कि आदर्श विहीन मनुष्य ५० हजार गलतियाँ करेगा तो किसी आदर्श को समक्ष रखकर चलने वाला हजार ही।

युवा पीढ़ी को स्वसाहस को भी जगाना होगा। आज आर्थिक विपन्नता के इस युग में उसे अपने समक्ष समस्याओं का जो महारासागर लहराता दिखाई दे रहा है, उसे पार करने के लिए उसे महावीर हनुमान, के सागरोल्लंघन का आख्यान तथा श्रीकृष्ण के महान अभियान एवं देव दयानन्द के गिग्विजय अनुष्ठान के उदाहरण अपने समक्ष रखने होंगे। उन्हें समझना होगा कि यदि वे नाना प्रलोभनों के बावजूद सत्य पर आरूढ़ रहे तो उन्हें ऐसी महान् शक्ति प्राप्त होगी जिसके समक्ष लोग ऐसी कोई बात कहते हुए भी डरेंगे जिसे वह सत्य नहीं समझते। किंतु इस स्थिति में आने के लिए उन्हें कपट और प्रपंचों से अपने हृदय मंदिर को सर्वथा स्वच्छ रखना होगा।

आदर्श कौन हो ?

वस्तुतः आज की स्थिति में प्रत्येक युवक को हनुमान के जीवन को अपना आदर्श बनाना होगा। उसे स्मरण रखना होगा कि हनुमान ने किस प्रकार श्रीराम की आज्ञा प्राप्त होते ही महोदधि की उत्ताल तरंगों को भी चुनौती देने का साहस अपने हृदय में संजोया था। उन्हें याद रखना होगा कि हनुमान को अपने लक्ष्य की पूर्ति में इसीलिए सफलता मिली थी कि वे जहां अद्‌भुत प्रतिभा के धनी थे, वहां सम्पूर्ण रूपेण इन्द्रियजित् भी। आज के आर्य युवक को अपना जीवन समर्पण के उसी महान् आदर्श पर खड़ा करना होगा, क्योंकि उसके माध्यम से ही क्रमशः अन्यं समग्र आदर्श जीवन में प्रकाशित होंगे। गुरु आज्ञा का सर्वतोभावेन पालन और अटूट ब्रह्मचर्य यही है सफलता की कुंजी।

आत्म संयम का विकास हो !

आत्म संयम का विकास भी युवा पीढ़ी में होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि संयभीजन किसी भी बाह्य वस्तु से प्रभावित नहीं हो सकते। असंयत और निरंकुश मन मानव को अधोगामी बनाकर उसके विनाश का पथ प्रशस्त करता है तो संयत मन सही अर्थों में रक्षक और प्रेरक है। आत्म संयम का विकास जीवन में गंभीरता और बालतुल्य सरलता के पारस्परिक योग पर निर्भर है। महर्षि दयानन्द ने मतान्धता से मुक्ति का जो आह्वान किया था वह भी इसकी उपलब्धि में सहायक है।

ऐसे विचारों से स्वयं को बचाना भी

आवश्यक है जो आत्मा की पावनता, शुचिता और शक्ति को संकुचित कर देते हैं । उन्हें ही कुविचार की संज्ञा दी जाती है । इनके स्थान पर अपने मन को ऐसे कार्यों की ओर लगाना ही जीवन को साफल्य मंडित बनाने का मर्म है जो आत्मा की अभिव्यक्ति में सहायक है ।

प्रत्येक युवक को स्मरण रहे.....

वर्त्तमान परिस्थितियों में स्वदायित्व की पूर्ति के इच्छुक प्रत्येक युवक को यह स्मरण रखना चाहिए कि अर्थहीन विषयों पर छिड़ी पुनारी लड़ाइयों को त्या देना ही युग की मांग है । प्रत्येक भारतीय युवक को यह स्मरण रखना चाहिए कि अनेक शताब्दियों तक भारत के दासता की शृंखला में आबद्ध रहने के कारण जहां अन्य कई होंगे वहाँ एक बड़ा कारण यह भी रहा कि पुष्ट मस्तिष्क वाले सैकड़ों व्यक्ति इसी प्रकार के विषयों को लेकर वर्षों तक तर्क विर्त में उलझते रहे थे कि लोटा भरकर पानी दाएं हाथ से दिया, जाए अथवा बाएं हाथ से । हाथ तीन बार धोए जाए अथवा चार बार । कुल्ला पाँच बार करना उचित है या छः बार । ऐसे व्यर्थ के प्रश्नों के लिए तर्क वितर्क में ही जीवन बिता देने वाले और ऐसे विषयों पर नितांत गवेषणापूर्ण दर्शन की रचना कर डालने वाले पंडितों से कोई मार्ग दर्शन न मिल सकेगा ।

महान् बनें किन्तु.....

युवा पीढ़ी को इस सत्य का सदैव स्मरण रखना होगा कि त्यागके बिना कोई भी महान् कार्य सिद्ध नहीं हो सकता । इस जगत् को दिशा दान देने के लिए भारतीय युवा पीढ़ी को नाम-यश, ऐश्वर्य और हास विलास ही नहीं अपितु जीवन के समर्षण की भी सिद्धता करनी होगी ।

उन्हें इस आह्वान का स्मरण रखना होगा ।
जीवन कर्म सहज भीषण है ।
उसका सब सुख केवल क्षण है ।
यद्यपि लक्ष्य अदृश्य धूमिल है ।
फिर भी वीर हृदय ! हलचल है ।
अंधकार को वीर अभय हो-
बढ़ो साहसी ! जग विजयी हो ।

यही आकांक्षा उन्हें पाश्चात्य युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन में सफलता प्रदान करेगी ।

श्रद्धांजलि
स्वामि कृपानंद जी का निधन

स्वामी कृपानन्द सरस्वती जी का दि. २४ फरवरी २०२० सोमवार के दिन मध्याह्न को निधन हुवा । वे ८३ वर्ष के थे । स्वामी जी का नाम एम. किशन जी था । इनका जन्म सन् १९३७ में नलगोण्डा जिला के कटंगूर ग्राम में हुआ । हाईस्कूल तक की पढ़ाई नलगोण्डा में ही हुई । बाद में सन् १९५३ में वे हैदराबाद आए तथा सन् १९५६ से टेलिफोन विभाग में मेकानिक के रूप में सेवारत रहें तथा दिसम्बर १९९४ में सेवा निवृत होकर वानप्रस्थी बने । तत्पश्चात् सन् २००५ में सन्यास की दीक्षा ली । वे आर्य समाज के अभिभानी एवं अनन्य भक्त थे । सदैव वे मण्डुकोपनिषद् बारे में चर्चा करते थे । तथा बहुत ही प्रेमी स्वभाव के थे । किसी भी कार्यक्रम में भाग लेते समय सदैव अपने साथ ओ३म् पताका लेकर ही आते थे । उनकी अंत्येष्टी दि. २५ फरवरी २०२० को वैदिक रीति से अम्बरपेट स्मशान वाटिका में संपन्न हुई । अत्येष्टि में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, उपप्रधान, उपमंत्री, सभा के कर्मचारि एवं नगरद्वय के आर्य समाजों के सदस्य उपस्थित थे । पश्चात् सभा प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह जी की अध्यक्षता में सभा की ओर से परम पिता परमात्मा से प्रार्थना कर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कि गई ।

-आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

श्रद्धांजलि

आर्य जगत् के नारद व हनुमान के नाम से विख्यात आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी निधन दि. १७ फरवरी २०२० सोमवार के दिन सायंकाल को होशंगाबाद के केशव अस्पताल में हुआ । प्रथम इनकी शिक्षा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिस्सार में हुई वहाँ से विद्या वासस्पती की उपाधी प्राप्त कर स्वामी दर्शनानन्द जी के गुरुकुल ज्वालापुर में विद्या भास्कर की उपाधी प्राप्त कर गुरुकुल कांगडी के स्नातक बने । पश्चात वे प्रचार कार्य आरंभ किए । साथ ही बड़े-बड़े धनवानों से संपर्क कर आर्य समाज के ग्रन्थों का प्रकाशन का कार्य करवाते रहे । और स्वयं भी अनेक ग्रंथों का लेखन कर प्रचार का कार्य करते रहे । इसी प्रकार अनेकों गरीब परिवार के बच्चों को अलग-अलग गुरुकुलों में प्रवेश कराकर उनको शिक्षित किया जिसमें आज कई विद्यार्थि देश-विदेश में प्रचार का कार्य कर रहे है । इसी प्रकार पानिपत के उद्योगपती श्री ओमप्रकाश जी गोयल के सहयोग से अनेकों गुरुकुल के विद्यार्थियों को एवं गरिब विद्यार्थिओं को कंबल भी बांटते थे । इस प्रकार अपना सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित कर अपनी ईहलिला समाप्त की ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना, परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा सद्गति प्रदान हो ।

-आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

भूल सुधार

१८ फरवरी २०२० अंक के पेज नं ४ पर प्रकाशित बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री भूपनारायण की जगह गलती से भूतनारायण छपा है कृपया गलति को सुधार कर पढ़ लें । गलती के लिए क्षमा चाहते है ।

स्वयं से मिलना सीखें

-साध्वी अणिमाश्री

आत्म-विस्मृति आज के विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। समप्रति मनुष्य शरीर को ही सजाने-संवारने में सारा समय लगा रहा है। इस बहुमूल्य समय का अपव्यय मात्र इसलिए हो रहा है कि मनुष्य काकेंद्र और परिधि शरीर ही बन गया है। शरीर की इच्छा-अभिलाषा की सम्पूर्ति में ही समय व्यतीत होता चला जा रहा है। आशा-तृष्णा का संसार बढ़ता चला जा रहा है। अग्नि में ईंधन डालते रहने से वह बुझती नहीं वरन और अधिक प्रज्वलित हो जाती है उसी तरह आकंक्षाओं को पूरा करने का जितना प्रयत्न किया जाता है वे उसी अनुपात में बढ़ती रहती हैं। जाल में फंसे हुए पक्षी के फंदे उसके फड़फड़ाने से और अधिक जकड़ जाते हैं। कीचड़ में फंसा हुआ हाथी ज्यों-ज्यों बाहर निकलने की कोशिश करता है उसमें और अधिक घंसता चला जाता है। इच्छाओं के संसार की भी यही स्थिति है। इन्हें पूरा करने पर भी इनका कहीं ओर-छोर नजर नहीं आता। यह अंतहीन श्रृंखला क्या कभी सिमट सकती है ? इस तथ्य पर गहराई से विमर्श करने की अपेक्षा है।

अंतर्दृष्टि के जागरण से ही समाधान का पथ उपलब्ध हो सकता है वरना दुःख, हताशा और निराशा के भंवरजाल में फँसी जीवन-किश्ती को किनारा मिलने की सारी संभावनाएं घूमिल हो जाती है। संपूर्ण जीवन को प्रभावित और व्याख्याथित करने में अन्तर्ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है तब शोक संतप्त एवं उद्विग्न व्यक्ति भी आध्यात्मिक भूमिका पर आरोहण कर सकता है। कहते हैं कि मनुष्य के भीतर पशुत्व एवं देवत्व दोनों का निवास है। पशु का कोलाहल तो चलता ही रहता है पर देवत्व को प्रयत्नपूर्वक जगाना पड़ता है। जिस तरह बदलों के कारणसूर्य स्पष्ट रूप से दृग्गोचार नहीं होता उसी तरह अज्ञान, आशंका आदि के कारण मनुष्य आत्म तत्व से विमुख रहता है।

यथार्थता से विमुख रहने वाला मनुष्य इतस्ततः भटकता रहता है। जीवन को प्रगतिशील और सुव्यवस्थित बनाने वाले घटक जब क्रियाशील होते हैं, पाथेय मिलता है और उसी संबल के कारण व्यक्ति देर-सवेर अपनी मंजिल एक पहुंच जाता है लेकिन इच्छा, आकांक्षा के सागर में गोते लगाने वाला व्यक्ति क्या कभी किनारा पा सकता है ? अफ्रीका में बंदरों को जीवित पकड़ने वाले शिकारियो ने नया तरीका निकाला वे लोग छोटे मुंह वाले घड़े में चने भरकर रख देते। बंदर उसमें हाथ डालता और चने मुट्ठी में भर लेता। ऊपर खींचते तो बंधी मुट्ठी हाथ को बाहर निकलने नहीं देती। बंदर सोचता हाथ को चनों ने पकड़ लिया। वह चीखता है, चिल्लाता है किंतु मुट्ठी खोलने की बात सोच नहीं पाता। अंततः वह पकड़ा जाता और मौत के मुंह में पहुंच जाता। अनेक व्यक्ति भी इसी तरह इच्छाओं तृष्णाओं और प्रलोभनों में फंसते है और उन्हें नहीं छोड़ पाने के कारण अपत्ति में फंस जाते है।

इच्छाओं की डोर में बंधा हुआ व्यक्ति कूदफांद कर सकता है लेकिन गहराई में उतरकर देखें तो ज्ञात होता है कि वह अपने जीवन में सद्भाव सहनशीलता की वीणा बजाकर जीवन को नया स्वर नहीं दे सकता और उदारता के क्षीर-समंदर में गोते नहीं लगा सकता। मनुष्य शारीरिक दृष्टि से कितना ही बलिष्ठ हो, बौद्धिक दृष्टि से कितना ही

मनुष्य शारीरिक दृष्टि से कितना ही बलिष्ठ हो, बौद्धिक दृष्टि से कितना ही तार्किक क्यों न हो, किंतु आत्म-संयम और आत्म-संपदा के अभाव में वह मणि-विहीन सर्प की तरह अर्द्धविकसित ही कहलाएगा। जिन्होंने अपनी आशा-तृष्णा को आत्मसंयम से जीता है, उन पर नियंत्रण किया है, ऐसे व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को सार्थक तो बनाते ही हैं, साथ ही जनमानस का पथ-दर्शन करते हैं।

तार्किक क्यों न हो, किंतु आत्म-संयम और आत्म-संपदा के अभाव में वह मणि-विहीन सर्प की तरह अर्द्धविकसित ही कहलाएगा। जिन्होंने अपनी आशा-तृष्णा को आत्म-संयम से जीता है, उन पर नियंत्रण किया है, ऐसे व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को सार्थक तो बनाते ही हैं, साथ ही जन-मानस का पथदर्शन करते हैं।

मनुष्य की महानता भौतिक संसाधनों और उपकरणों पर ही टिकी हुई नहीं है बल्कि उसकी आंतरिक शक्ति और गुण विकास ही क्षमता पर भी निर्भर करती है। आंतरिक श्रेष्ठता के आधार पर ही व्यक्ति की श्रेष्ठता एवं ज्येष्ठता प्रमाणित होती है। भौतिक संपदाओं को प्राप्त करके व्यक्ति गर्वोन्नत होजाता है और आत्म-कल्याण में मूल तत्त्व को भूल जाता है। उसे कहां फुर्सत है कि वह अतृप्ति की इस न बुझने वाली आग को बुझाने का प्रयास करे। भोग मनुष्य को क्षणिक सुख देकर उसे एक स्थायी अतृप्ति की ज्वाला में झोंक देते हैं। तब व्यक्ति व्यर्थ के भटकाव की पगडंडी पर चलता रहता है। वह क्षणिक सुख उसे कहां तृप्ति दे सकता है ? कभी पर्यटन कभी परिवर्तन और कभी प्रकृति की गोद में अमोद हेतु संचरण करता हुआ भी स्थायी उल्लास और आनंद के स्रोत को प्राप्त नहीं कर सकता। क्यों ? कारण स्पष्ट है, जो जो वस्तु जहां नहीं है, वहां वह कैसे मिल सकती है ? आनंद का निर्झर तो अंतश्चेतना की गहराइयों में ही प्रस्फुटित होता है। व्यक्ति जब एक आशा, तृष्णा और इच्छा आकांक्षओं के अंतहीन प्रवाह में प्रवाहित होता रहेगा तब तक शाश्वत आनंद की प्रापति तो दूर उस राजपथ की अवगति भी वह नहीं पा सकता क्यंकि अंतर्मुखी बने बिना उसे पाया नहीं जा सकता। जब तक अपने आपको खोजने समझने का प्रयास प्रारंभ नहीं होगा। तबतक आंतरिक क्षमताओं के उद्गम स्थल को पहचान नहीं सकता। आत्मा का साक्षात्कार और आत्मोपलब्धि अंतर्जगत की महायात्रा पर यात्रायित हुए बिना कभी नहीं हो सकती।

कहते हैं वायजित आतमचितन में निमग्न थे। किसी ने उनके दरवजे पर दस्तक दी। दरवाजा खोलते हुए उन्होंने आगंतुक से पूछा- अरे भाई ! किसे खोज रहे हो ? आगंतुक ने कहा- मैं वायजित से मिलना चाहता हूं, उन्हीं को खोजने के लिए में यहां तक आया हूं। वायजित ने कहा- भ्रात ! मैं पिछले पचीस वर्षों से वायजिद की ही तलाश कर रहा हूं, पर वह अभी तक मुझे मिला नहीं। आंगतुक के असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गई। अभी थोड़ी देर पहले ही निकटवाली कुटिया में रहने वाले व्यक्ति ने बाताया था कि वायजित इसी कुटीर में रहते हैं थे महाशय कहते हैं कि मैं भी पच्चीस वर्षों से वायजिद को खोज रहा हूं लेकिन अभी तक उससे मेरी मुलाकात नहीं हुई। संशय की आड़ी-तिरछी देखाएं आगंतुक के चेहरे पर स्पष्ट अंकित हो रही थी। तभी संपूर्ण संशयों को विराम तक पहुंचाते हुए वायजित ने कहा- बंधुवर ! आत्मा को पा लेना ही सर्वोपरि उपलब्धि है और यह वायजिद, जो तुम्हारे सामने उपस्थित है, वह उसी खोज मे लगा हुआ है। आगंतुक यह सुनकर भावविभोर हो गया।

आज बहुत बड़ी आवश्यकता और अपेक्षा है कि व्यक्ति अपनी मोहासक्त चेतना का परिष्कार करे। तृष्णा के सुलगते दावानल को आत्म-संयम के नीर से शांत करे और आध्यात्मिक विचार तरंगों से तरंगित होकर आत्म-ज्योति से ज्योतिर्मय बन जाए।

अग्निहोत्र द्वारा पर्यावरण सुरक्षा
(एक वैज्ञानिक विश्लेषण)

-ईश नारंग

पर्यावरण प्रदूषण आज की एक ज्वलंत समस्या है, पूरी मानवता इससे त्रस्त है। संसार के सभी वैज्ञानिक एकत्रित रूप से इससे जूझने का प्रयास कर रहे हैं। आधुनिक विज्ञान प्रदूषण को रोकने के लिएतो कुछ तरीके ढूंढ़ पाया है, किन्तु एक बार प्रदूषित वातावरण को पुनः शुद्ध करने के लिए अभीतक कोई भी उपाय खोजने में असहाय है। यदि हम भारत के अतीत की ओरदेखें तो ज्ञात होता है कि हमारे वैज्ञानिक जिन्हें हम ऋषि कहते हैं, वे भी इस समस्या के प्रति सजग थे और उन्होंने हमें एक ऐसा उपाय दिया जो नकेवल पर्यावरणको प्रदूषित होने से रोकता है अपितु प्रदूषित वातावरण को पुनः शुद्ध करने की क्षमती भीरखाता है, यह विधिहै अग्निहोत्र।

हमारी प्राचीन अग्निहोत्र की परम्परा न केवल प्रदूषण को रोकती है अपितु प्रदूषित वातावरण एवं वायुको पुनः शुद्ध करने में भी पूरी तरह सक्षम है, यह प्रदूषण की रोकथाम का सबसे प्राचीन विज्ञान है। अग्निहोत्र केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं हैअपितु इसमें एक महान विज्ञान छिपा है।

आजकल के युवा तथा तथाकथित सेकुलर व्यक्ति अग्निहोत्र के विषय में अनेक गलत धारणाओं का शिकार हैं। पहली यह कि जो पदार्थ आहुति के रूप में डाला जाता है वह नष्ट हो जाता है, दूसरी यह कि समिधाआदि जलने से वातावरण में कार्बनडाइआक्साइड आदि बढ़ जाती है ौर हवा में प्रदूषण में वृद्धि होती है।

आइये देखें कि आधुनिक विज्ञान इस विषय में क्या कहता है।

१) प्रदूषण कई प्रकारके हैं (क) रासायनिक प्रदूषण यथा :- कार्बनडाईआक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, आदि, (ख) जैविक प्रदूषण यथा : वायरस, बैक्टीरिया, आदि और (ग) परमाणु विकिरण से प्रदूषण।

२) विज्ञान कहता है कि कोई भीपदार्थ न तो कभी बनायाजा सकता है न नष्ट किया जा सकता है (Matter can neither be created nor destroyed), वेद कहता है प्रकृति, आत्मा और परमात्मा अनादि हैं। आधुनिक विज्ञान अभी केवल प्रकृति (matter) को ही अनादि मानता है।

३) जब हम अग्निहोत्र की अग्नि में उपयोगी और औषधीय पदार्थों की आहुति देते हैं तो वे नष्ट नहीं होते अपितु गैस के रूप में परिवर्तित होकर, सूक्ष्म होकर और अग्नि क भेदक शक्ति से गतिशील होकर सुदूर स्थानों में पहुँच कर पूरे वातावरण को लाभ पहुँचाते हैं। ठोस से गैस के रूप में परिवर्तन की इस प्रक्रिया को Sublimation कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा औषधीय पदार्थों की गुणवत्ता को कई सौ गुना बढाया जा सकता है और एक के स्थान पर अनेक व्यक्तियों को लाभ पहुँचता है। इस प्रकार घरके अन्दर और बाहर पूरी वायु का शुद्धिकरण होता है।

४) इस तथ्य को अनेक वैज्ञानिक शोधों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है। यहाँ हम शोध और विभिन्न स्थानों पर किए गए प्रयोगों के कुछ परिणामों का वर्णन दे रहे हैं।

५) कुछ समय पूर्व एक अश्वमेध यज्ञ गोरखपुर उत्तर प्रदेश में आयोजित किया गया था और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने

अग्निहोत्र केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है अपितु पर्यावरण शुद्धिकी वैज्ञानिक प्रक्रिया भी है। प्रदूषण को दूरकरने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हवनकुंड में सामग्रीके रूप में औषधीय पदार्थ डाले जाते हैं, वे गैस (धूम) रूप में परिवर्तित होकर अति सूक्ष्म और गतिशील होने के कारण वातावरण को प्रभावित करते हैं। इन्हीं सब तथ्योंके आधारपर शोधार्थी लेखक ने अग्निहोत्र के वैज्ञानिक स्वरूपको प्रकट किया है।

इस यज्ञ से पूर्व और बाद में वैज्ञानिक यंत्रों द्वारा वायु के विभिन्न प्रदूषण करने वाले कारकों की जांच की थी। इस जांच के निष्कर्ष आश्चर्यजनक थे। वैज्ञानिकों ने हवा में सल्फरडाइऑक्साइड में ७०% की कमी, नाइट्रोजन ऑक्साइड में ११% और यज्ञ स्थली के पास पानी में रोगाणु या बैक्टीरिया में ६६% की कमी पाई।

६) इसी तरह राष्ट्री वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और एशियाई कृषि इतिहास फाउंडेशन द्वारा किए गए **एक अध्ययन में पाया गया कि ६० मिनट के अग्निहोत्र से हवा में ९४% हानिकारक जीवाणु नष्ट हो गए।** इस अग्निहोत्र में गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार सेप्राप्त हवन सामग्री प्रयोग की गई थी।

७) डॉ. अरविन्द डी, मोंदकर (एमएससी, पीएचडी, माइकोर्बायोलॉजी) ने अपने प्रयोगों में अग्निहोत्र द्वारा वायु के बैक्टीरिया में ९१.४% की कमी/विनाश पाया गया।

८) डॉ. Hafkin कहते हैं, घी और चीनी के जलने से कई रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

९) प्रोफेसर Tilward कहते हैं, घी और चीनी के जलने से उत्पन्न होने वाले धुँए से टी.बी., खसरा, चेचक आदि के रोगाणु नष्ट होजाते हैं।

१०) एक रूसी वैज्ञानिक डॉ. Shirowich के अनुसार गाय के घी के जलने से उत्पन्न धुंआ काफी हद तक परमाणु विकिरण के प्रभाव को कम कर देता है।

११) इसीतरह पोलैंड के डॉ. एल ने पाया कि अग्निहोत्र

१२) उपुर्यक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अग्निहोत्र सेतीनों प्रकार के प्रदूषण नष्ट होते हैं। इस प्रकार हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारे ऋषि वास्तव में महान वैज्ञानिक थे। वे आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों के बारे में जानते थे।

वे जानते थे कि पदार्थ न तो बनाया जा सकता है, न नष्ट किया जाता है, केवल उसकी दशा में परिवर्तन होता है। (प्रकृति अनादि है)।

जब हम किसी पदार्थ को अग्नि में आहूत करते हैं तो यह sublimation क्रिया द्वारा गैस के रूप में बदल जाता है।

वे पर्यावरण और हवा की शुद्धिकी आवश्यकता को भी अच्छी तरह से समझते थे। वे विभिन्न औषधियों के रोगनाशक गुणों को भी समझते थे और उन्हें पदार्थ की सूक्ष्म अवस्था में जाने पर सैंकड़ों गुणा बढ़े हुए प्रभाव का भी गहरा ज्ञान था। वे अग्नि की भेदक शक्ति जिसे आज के वैज्ञानिक aerodynamics power के नाम से जनानते हैं से भी परिचित थे जिससे Sublimated पदार्थ घरके दूर और पास के कोनों में प्रसारित आ जाता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि आज के प्रदूषित वातावरणके युग में, जहाँ एक बार प्रदूषित वातावरण को पुनः शुद्ध करने की कोई अन्य विधि नहीं है, अग्निहोत्र का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह बात आज के बंद कमरे में रहने की जीवन शैली में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारा अधिकांश समय आज बंद कमरों में ही बीतता है। इस जीवन शैली में अग्निहोत्रजीवन की एक परम आवश्यकता बन गया है।

-शोध छात्र, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

जिज्ञासा प्रभु मिलन की

-हिन्दी मिलाप से...

वेद मनुष्य जीवन का आईना है । यदि आप प्रभु को पाना चाहते है तो वेदों को आधार बनाइए । इसके लिए आपको जरूरत है जिज्ञासा की, दृढ़ संकल्प की और आत्म विश्वास की । जिज्ञासा के द्वारा ही मनुष्य में आत्म विश्वास पैदा होता है, जिससे आप प्रभु को पाने में पूरी तरह सक्षम हो जाएंगे और हंस्ते-हंसते इस भवसागर से पार उतर जाएंगे ।

इसके लिए कोई शर्त नहीं है कि आप गरीब है या अमीर, श्रेष्ठ हैं या सामान्य कोई भी जिज्ञासु पुरुष इसके लिए योग्य है । इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं जिन्होंने अपनी जिज्ञासा के बल पर अनेक कष्ट सहन करते हुए भी अपना अभिष्ट प्राप्त किया । ग्रीस के नगर सेराकूज में बीच बाजार में नंगे बदन 'युरिका-युरिका' (मैंने पा लिया) चिल्लाता हुआ पागलों की मांति दौड़ने वाला आर्किमिडीज विश्व विख्यात गणितज्ञ हुआ, इटली निवासी गैलिलियों को खोज करने और सच्ची बात कहने के कारण टाट के कपड़े पहनने पड़े । विलियम हार्वी को हजारों वर्षों का रक्त परिभ्रमण संबंधी मत तोड़ने के लिए इंग्लैंड के ही नहीं अपितु जिसे यूरोप भरके डॉक्टरों से मोर्चा लेना पड़ा और चार्ल्स के सामने अपनी जान की बाजी लगानी पड़ी । माइकल फैरेडे इस बात का जीता जागता उदाहरण है कि गरीबी में भी कोई कैसे अपनी जिज्ञासा पूर्ण कर सकता है । कौन जानता था कि एक गरीब लुहार का लड़का एडीसन विद्युत प्रकाश का दाता होगा । बालकों की देखरेख करने वाली सामान्य महिला मैडम क्यूरी रेडियम की आविष्कर्त्री हुई उन लोगों का आज तक संसार ऋणी है । इन सबके पीछे जिज्ञासा ही तो थी, जो इन्हें महानता का दर्जा दे गई ।

विदेशों में ही नहीं भारत में भी ऐसे अनेकों विद्वान हुए जो गरीबी को तोड़कर विख्यात हुए-ईश्वरचंद्र विद्यासागर, सर गुरुदास बनर्जी, गौरीशंकर हीरानंद ओझा, उपन्यास सम्राट मुशी प्रेमचंद और गरीब मछुआरे के घर पैदा हुए भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम । इन सबके पीछे भी कुछ नया करने की, कुछ पाने की और कुछ जानने की जिज्ञासा प्रबल थी ।

इस संसार की समस्त भौतिक व आध्यात्मिक संपदा पाना मनुष्य की जिज्ञासा पर निर्भर करता है । आपके अंदर अगर प्रभु मिलन की तरह उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते हर वक्त प्रभु का स्मरण कीजिए, उसके नाम का जप कीजिए, कीर्तन कीजिए या उनकी भक्ति को अपनी जिज्ञासा का आधार बनाइए । प्रभु की यह प्रतिज्ञा है कि- 'मेरे प्रति जिज्ञासु तो बन कर देख तुझे अपने चरणों में जगह न दूं तो कहना ।' परंतु

आपके अंदर अगर प्रभु मिलन की जिज्ञासा है, उन्हें पाने की चाह है तो मीरा की तरह उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते हर तक प्रभु का स्मरण कीजिए, उसके नाम का जप कीजिए, कीर्तन कीजिए या उनकी भक्ति को अपनी जिज्ञासा का आधार बनाइए । प्रभु की यह प्रतिज्ञा है कि- 'मेरे प्रति जिज्ञासु तो बन कर देख तुझे अपने चरणों में जगह न दूं तो कहना ।'

आपकी जिज्ञासा ऐसी हो जैसी भक्त प्रह्लाद की थी, ध्रुव की थी, शबरी, सूरदास और तुलसी की थी । इन सभी को प्रभु की प्राप्ति हुई । कहते हैं काम का दास तुलसी अपनी पत्नी रत्नावली से प्रेरित होकर भगवान के प्रति जिज्ञासु हुआ और उन्होंने भगवान की प्राप्ति का साध्यम उनकी संपूर्ण जीवन लीला को कलमबद्ध करके संसार को दिया । जिसका परिणाम रामचरित मान जैसा पवित्र और विशाल ग्रंथ बना । आज भी रामचरितमानस की उपादेयता गरीब की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक एक समान है । तुलसी से भक्त तुलसीदास और फिर महाकवि तुलसीदास ने अंत समय राम-राम कहकर प्रभु में अपने आपको विलीन कर दिया । यह सब उनकी गहन जिज्ञासा का परिणाम था ।

आप भी अपने अंदर ऐसी जिज्ञासा जगाएं कि प्रभु को स्वयं आकर आपका हाथ थामना पड़े । आपकी इच्छा शक्ति इतनी दृढ़ हो जाए कि आपका प्रत्येक कार्य प्रभु के नाम से शुरू हो और प्रभु का नाम लेते-लेते पूर्णता की ओर बढ़े । आपकी जिज्ञासा एक विद्यार्थी की तरह हो, जो किताबके प्रत्येक पृष्ठ को इतनी उत्सुकता से पढ़ता है कि आखिर इसमें छिपा क्या है, इसमें विशेषता क्या है, विद्यार्थी पूरे वर्ष मेहनत करने के बाद जब परीक्षा का परिणाम जानने की राहदेखता है तो उसके माता-पिता की जिज्ञासा भी उससे जुड़ जाती है । वे भी जानना चाहते है कि उनके बच्चे ने पूरे वर्ष कितनी लगन से पढ़ाई की है ।

ऐसी ही एक जिज्ञासा विद्यार्थी काल में स्वामी विवेकानंद में जगी थी । उन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से कहा कि मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूं ।

रामकृष्ण परमहंस ने कहा- क्या तुम इसके लिए तैयार हो ?

विवेकानंद बोले-हां गुरुदेव ।

रामकृष्ण परमहंस ने कहा-किस तरह तैयार हो ?

विवेकानंद ने कहा-मेरी ब्रह्म को जानने की जिज्ञासा इतनी तीव्र है कि आप कहें तो आग में कूद जाऊं । आप कहें तो जलते हुए तवे पर बैठ जाऊं ।

बस, ऐसी ही जिज्ञासा आप में होनी चाहिए । फिर कोई भी कंटक, कोई भी वाधा आपके मार्ग में नहीं होगी ।

फिर तो प्रभु मिलन होकर ही रहेगा । कहा गया है कि- 'आना हो मजबूरी होगी उसकी सदा जो तेरे दिल से निकले ।'

केवल अपने मन में गहरी जिज्ञासा जगाइए और अपने आराध्य परम पुरुष परमात्मा से हाथ जोड़कर सच्चे मन से प्रार्थना कीजिए फिर देखिये कि वहकैसे आपके सामने आ खड़ा होता है ।

జననీ జన్మభూమిశ్చ స్వర్గాదపి గరీయసీ

(... గత సంచిక తరువాయి...)

-డా॥ కోదూరి సుబ్బారావు

క్రీ.శ. 1528లో బాబర్ మనదేశంపై దండెత్తి వచ్చాడు. అప్పటికి ఆ ప్రాంతాన్ని 'రాణా సంగ్రామ సింహ' (రాణాసాంగా) అనే పేరుగల ఒక పరాక్రమవంతుడైన రాజు పాలించేవాడు. అతడు ఎంతటి శక్తివంతుడైన ఆక్రమణదారుడి నైనా ఎదిరించగల సమర్థుడు. ప్రపంచ వీరపరు షులలో అతనొకడు. అతడు, అతని సైన్యము బాబరు సైన్యాన్ని జయించగల శక్తివంతములైనవి కాని, వీర భారతజాతికి శత్రువులనదగు ఫలిత జ్యోతిషులు అప్పుడు గ్రహములు సరిగా లేవని వేరొక తప్పుడు ముహూర్తం చూపించారు. దానితో వారి ఉత్సాహం చల్లబడి పోయింది. గ్రహాల భయం పట్టుకుంది. యదార్థంగా గ్రహాలు జడపదార్థాలు. పరమేశ్వరుని శాసనం వల్ల అవి వాటి పరిధిలో ఒక క్రమపద్ధతిలో తిరుగుతున్నాయేకాని అవి ఎవరినీ ఏమీ చేయవు. ఈ ఫలిత జ్యోతిషులే బాధించే గ్రహలు కాని అవి కావు. దాని పర్యవసానంగా బాబరు రాణా సాంగాతో యుద్ధంచేసి విజయం సాధించి శ్రీరామజన్మ భూమియైన అయోధ్యలో మసీదుకట్ట సంకల్పించాడు. అయోధ్యను మక్కాగా మార్చాలని అతని కోరిక. అందుకు అతడు చాలా క్రూరంగా ప్రవర్తించాడు. ఆంగ్లపాలకుడైన కర్నల్ కనింఘమ్ లక్నో గెజిట్‌లో ఏమని వ్రాశాడంటే- "బాబర్ యొక్క వజీరైన మీర్‌బాంకీ అయోధ్యా రామమందిరాన్ని కూలగొట్టాడు. దాని స్థానంలో మసీదు నిర్మించటానికి పునాదులు తీశాడు. 1,76,000 మంది హిందువులను చంపి నీటికి బదులుగా వారి రక్తాన్ని సున్నంలో కలిపి గోడలు నిర్మించా"డని వ్రాశాడు. బాబర్ ఎంతటి క్రూరుడో ఆలోచించండి.

ఇంతేగాక, వాడు మరెన్నో క్రూరకృత్యాలు చేశాడు. రాజపుత్రులచే నిర్మించబడిన ఫతేపూర్ సీకరీ రాజభవనాన్ని అనూపజీల్ మరియు అనేక దేవాలయాలను వికృతం చేశాడు. వాటి శిల్పకళ భారతీయకళ. కాని, వాటిని మసీదులుగా సమాధులుగా మార్చివేశాడు. బాబర్ ధామదేవ్‌ని ఓడించి సీకరీకోటను వశం చేసుకున్నాడు. అతని బావగారైన అజీత్ సేన్‌తో బలవంతంగా గోమాంసం తినిపించి మహ్మదీయునిగా మార్చి వేశాడు. బాబర్ సీకరీపర్వతంపై రాజపుత్ర వీరుల శిరస్సులతో విజయ స్థూపాన్ని నిర్మించాడు. సకర వార క్షత్రియులను అక్కడనుండి పారద్రోలాడు. యమునా స్తంభాన్ని కుతుబ్‌మినార్ చేశాడు. శివమందిరమైన తేజో మహాలయాన్ని తాజ్‌మ హాల్ చేశాడు. అయోధ్యను ఫైజాబాద్‌గాను, ప్రయాగను ఇలహాబాద్‌గాను పేర్లు మార్చాడు. చాలా గ్రామాల పట్టణాల పేర్లు అరబీపేర్లు అయిపోయాయి.

క్రీ.శ. 1561 లో అక్బర్ గోండ్వానాలో మహారాణి దుర్గావతిని, ఆమె కుమారున్ని చంపివేశాడు అనంతరం చిత్తోడ్ దుర్గాన్ని జయించి ఎంతో మంది రాజపుత్ర వీరులను వధించాడు. దానితో వారి పత్నులంతా అగ్నికి ఆహుతియయ్యారు. ముస్లిమ్ ఇతిహాసకారులైన అల్ బదాయూనీ ఫిగస్తా మరియు నిజామూద్దీన్ అహ్మద్ స్వహస్తాలతో వ్రాసిన వాక్యము లేమంటే- "అక్బర్ చిత్తోడ్‌లోని మందిరాలన్నిటిని ధ్వంసం చెయ్యమని ఆజ్ఞాపించాడు. వాటి రక్షణకై పోరాడిన 10,000 మంది రాజపుత్ర వీరులను అక్బర్‌సైన్యం సంహరించిం"దని వ్రాశారు. రాణా ప్రతాప్ అడవులకు పారిపోయాడు. అక్కడ విధిలేక గడ్డిరొట్టెలు తినవలసివచ్చింది. రణథం భౌర్ యొక్క సుర్జనసింహ మరియు కాలింజర్ రామచంద్ర సింహ పరాజితులయ్యారు. క్రీ.శ. 1562లో అక్బర్ జయపూర్‌రాజా బిహారీమల్ యొక్క పుత్రికను అతడు వివాహమాడాడు. మీనా బజార్‌ను ఏర్పాటుచేశాడు.

జహాంగీర్ మేవాడపై నాలుగు పర్యాయాలు ఆక్రమణచేశాడు. రణకపూర్ మందిరాన్ని కూలగొట్టాడు. దాని రక్షణలో ముకుందదాస్ అనువీరుడు మరణించ వలసివచ్చింది. జహంగీర్ ఆజ్ఞతో ఖురమ్ మేవాడపై మరొకసారి ఆక్రమణ జరిపాడు. మందిరాలు కూలద్రోశాడు. పంటలు తగులబెట్టాడు. హిందూ స్త్రీలను, పిల్లలను బజారులోపెట్టి బానిసలుగా వేలం వేశాడు. మానబాయి మొదలైన ఎంతోమంది స్త్రీలను తాను బలవంతంగా వివాహం చేసు కున్నాడు. మానబాయి పుత్రుడి కన్నులు పొడిచి వేసి జైలులో బంధించాడు. అనంతరం షాజహాన్ అతనిని చంపివేయటం జరిగింది. షాజహాన్ తల్లి మానవాడ నరేశ్ ఉదయసింహుని పుత్రిక. జహాంగీర్ గురు అర్జున్‌దేవ్‌ను ఎన్నో చిత్రహింస లకు గురిచేసి చంపివేశాడు.

శిఖ్ఖుల గురువులలో గురు అర్జున్‌దేవ్ 5వ వారు. శ్రీహరగోవింద్ 6వ వారు. శ్రీ తేజ్‌బహదూర్ 7వ వారు. ఔరంగజేబు పిలుపుపై శ్రీ తేజ్ బహదూర్ గారు 5 గురు వీరులతో ఢిల్లీకి వెళ్ళారు. ఔరంగజేబ్ ఆ వీరులను క్రూరాతిక్రూరంగా చంపివేశాడు. మతిదాసును అంపముతో రెండుముక్కలుగా కోయించాడు. దయాలును నీటి తొట్టెలో పెట్టి మంటలపై పెట్టి మరగబెట్టాడు సతోదాసును దూదితో చుట్టిపెట్టి కాల్చివేశాడు. అయిదుగురు అనుచరులను ఆ విధంగా చేసి గురు తేజ్‌బహదూర్ శిరస్సును ఖండించి చాంది నీచౌక్‌లో వ్రేలాడదీశాడు. అనంతరం ఆ శిరస్సు ను గురుగోవిందదాసు వద్దకు పంపాడు. అతని పుత్రులను కూడా క్రూరంగా చంపివేశాడు.

ఔరంగజేబు హిందువుల శిరస్సులను మూత్రంతో తడిపి శిఖా సహితంగా గొరిగించి ఊరేగించేవాడనీ, వారి శిరస్సులను ఇటుకలతోను, చెప్పులతోను, కొట్టించేవాడనీ 'గోవింద వాణి'లో వ్రాయబడింది.

మథురానగరంలోని కేశవదేవకటరా మన మహాపురుషుడైన శ్రీకృష్ణుడు జన్మించిన స్థానం. ఆ స్థలంలో విశాలమైన భవ్యమైన ఒక మందిరంఉండేది. ఆ దివ్య మందిరాన్ని ముస్లిమ్‌లు నేలమట్టం చేశారు. క్రీ. శ. 4009 ప్రాంతంలో రాజా విక్రమాదిత్యుడు అచట ఒక భవ్యమందిరాన్ని నిర్మించాడు. దాని సమీపంలోనే కొన్ని బౌద్ధమందిరాలు, కొన్ని జైనమందిరాలు ఉండేవి. వాటన్నిటినీ క్రీ.శ. 1017లో మహ్మద్ గజనీ ఛిన్నాభిన్న చేసి వాటిలోని సంపదలన్నీ దోచు కున్నాడు. ఆ మందిర వైభవాన్ని గురించి మహ్మద్ యొక్క ముంశీ అలుతనవీ ఏమని వ్రాశాడంటే- అటువంటి భవ్యమందిరం నిర్మించటానికి కనీసం 200 సంవత్సరాలు పట్టి ఉంటుంది. దాని విలువ పదికోట్ల స్వర్ణ ముద్రలకన్న ఎక్కువగానే ఉంటుం'దని వ్రాశాడు. (ఈ విలువ సుమారు వెయ్యి సంవత్సరాల పూర్వపుది).

క్రీ.శ. 1150లో అచట మరొక మందిరం నిర్మించబడింది. దానిని సికిందర్ లోఢీ ధ్వంసం చేశాడు. అనంతరం మరొక 125

సంవత్సరాల తరువాత ఓర్చానరేశ్ శ్రీ వీరసింహ జూదేవ్ 33 లక్షల వ్యయంతో 250 అడుగుల ఎత్తుతో 8 అంతస్థుల మందిరాన్ని నర్మించాడు. అది ఆగ్రా నుంచి చూస్తే కూడా కనపడేదట. కాని, దురదృష్టవశాత్తు మనం దానినీ పోగొట్టుకున్నాం. కీ.శ. 1669లో ఔరంగజేబు దానిని ధ్వంసం చేసి అదే స్థానంలో ఆ రాళ్ళతోనే ఈద్గాహ నిర్మించాడు. అది యిప్పటికీ ఉంది. ఇంతేకాక, ఆ దుర్మార్గుడు చాలా దుష్కృత్యాలనే చేశాడు. అతడు జుర్ఘార సింహను హత్యచేసి అతని భార్య లనందరిని తన అంతఃపురంలో బంధించాడు. శ్రీ గురుతేజ్ బహదూర్ మరియు శమ్బా లను హత్యచేశాడు. కాశీవిశ్వేశ్వర మందిరాన్నీ, దాని చుట్టు ప్రక్కల ఉండే సుమారు 10,000 మందిరాలను ఛిన్నా భిన్నం చేశాడు. వాటిపై మసీదు నిర్మించాడు. కాశీ నగరానికి మహ్మదా బాదని పేరు పెట్టి అందరిచేత ఆవిధంగా పిలిపిం చాడు. ఆ దుష్టుడు 90 సంవత్సరాలు బ్రతికి ఎంతో పాపాన్ని మూటగట్టుకు పోయాడు.

ఔరంగజేబ్ అనంతరం క్రమంగా దేశం చిన్న చిన్న రాజ్యాలుగా సంస్థానాలుగా మారిపోయింది అయినా ఎన్నో దోపిడీలకు, అవమానాలకు, అత్యాచారాలకు గురియ య్యింది. వీటన్నిటికి ముఖ్యకారణం మధ్య కాలంలో హిందువులలో ఏర్పడిన ధార్మిక బల హీనతలు. వేదమతానికి దూరమై పౌరాణిక భావాలకు దాసులుకావటం. ఏకేశ్వరోపాసన స్థానంలో అనేక దేవీదేవతలను కల్పించి పూజిం చటం. పెద్ద పెద్ద మందిరాలను కట్టివాటిలో సంపదలనంతా దాచుకోవటం. ఆ సంపదలను ఆ దేవతామూర్తులే కాపాడతాయని భ్రమిం చటం.

పౌరాణిక భావాలవల్ల అనేక దేవీదేవతలతో బాటు అనేక సైవ వైష్ణవ శాక్త్యేయాది సాంప్రదా యాలు పుట్టుకొచ్చాయి. దీనితో ఐకమత్యం కొరవడటమేకాక సాంప్రదాయకులు పరస్పరం ద్వేషించుకోవటం, కలహించుకోవటం, యుద్ధా లుచేయటం కూడా జరిగాయి. ఇవి తరువాత వచ్చిన ఆంగ్లేయులకు చాలా ఉపకరించాయి.

ఆంగ్లేయ పాలన

వర్తకం పేరుతో వచ్చిన ఆంగ్లేయులు ఈ అంతః కలహాలను రెచ్చగొట్టి వారి పబ్బం గడుపు కున్నారు. క్రమంగా దేశం ఆంగ్లేయుల వశమయ్యింది. వారు ముస్లిమ్స్ మాదిరిగా విధ్వంసం చేయకపోయినా కుయుక్తులతో, వ్యాపారులతో, పన్నులతో, అనేక చట్టాలతో ఇక్కడి సంపదలను ఇంగ్లాండ్కు తరలించుకు పోయారు. ఇక్కడి కళాకౌశలాలను, విజ్ఞాన సంపదను చూసి ఓర్వలేకపోయారు. కళాకా రుల వ్రేళ్ళను నరికించివేసి వారిపై అనేక చట్టా లను వర్తింపజేసి చిత్రహింసలకు గురిచేశారు. వీరి ఉన్నతికి మూలకారణ మెక్కడవుందా అని అన్వేషించారు. వారికి రెండు కారణాలు కనబ డ్డాయి. మొదటిది వేదాలు, వైదిక సంస్కృతి. రెండవది గురుకుల విద్యావిధానం. ఈ రెంటిని నాశనంచేస్తే శాశ్వతంగా ఈ దేశం మనకు బానిస అవుతుందనుకున్నారు.

పూర్వ ప్రకరణంలో తెలిసికొన్నట్లుగా వేదాలు సృష్ట్యాదిలో పరమేశ్వరుని ద్వారా మానవులకు లభించిన జ్ఞాన నిధులు-జ్ఞాన దీపాలు. అవి, అప్పుడు ఇప్పుడు ఎప్పుడూ సృష్టి రహస్యాలను నియమాలను తెలిపే జ్ఞాన దీపాలే. అవి సృష్టికర్త తెలిపినవి కనుక వాటిలో పొరబాట్లు తప్పిదాలు ఉండవు. భౌతిక సామా జిక నైతిక ఆత్మిక ఉన్న తులను కోరేవారందరు వాటిని తప్పక చదువ వలసిందే- అనుసరించ వలసిందే. వాటిని రక్షిస్తూ వాటిని ముందు తరాల కందించవలసిన బాధ్యత మానవు లందరికి ఉంది. వేదాల పుట్టినిల్లు భారతదేశమే కనుక ఆ బాధ్యత భారతీయులపై ఎక్కువగా ఉంది. అందుచేతనే, పూర్వం కొన్ని వేల లక్షల కుటుంబాలువేదరక్షణ కంకితమైపో యాయి. ఈ ప్రథను నాశనం చేస్తేకాని భారతీ యులను పూర్తిగా వశం చేసుకోలేమనే సత్యాన్ని లార్డ్మెకాలె మొదలైన ఆంగ్లేయ మేధావులు బాగా గుర్తించారు. దానిని నాశనం చేయ గట్టి ప్రయత్నం చేశారు.

మొదటి ప్రయత్నంగా మన మూలగ్రంథా లైన వేదాలపై మనకుగల భక్తి శ్రద్ధలను తగ్గించ టానికి వేదాలపై తేలిక భావం, హీనభావం కలిగే టట్టుగా ఒక భాష్యాన్ని వ్రాయించాలను కున్నారు. జర్మన్ పండితుడైన మాక్స్ముల్లర్కు ధనాశను చూపి వేదాలకు వక్రభాష్యం వ్రాయించారు. ఆర్యుల మూలనివాసం భారతదేశం కాదనీ, మధ్య ఆసియా నుండి వచ్చిన ఈదేశాన్ని ఆక్ర మించారనీ వ్రాయించారు. భారతదేశం ద్రావిడులదేశమనీ, ఆర్యులు బయటనుండి వచ్చి ద్రవిడులను దక్షిణదేశానికి తరిమివేసి ఉత్తరదేశమంతా ఆర్యులు ఆక్రమించారనీ కల్పిత చరిత్రను ప్రచారం చేశారు. ఉత్తర దక్షిణ భారత దేశాల వారికి తగవులు పెట్టారు. వేదాలు బయట నుండి ఆర్యులు తెచ్చిన గ్రంథాలనీ, వాటిలో ఏమీ పెద్ద గాజ్ఞానం లేదనీ, అవన్నీ ఆటవి కులు పాడుకున్న పద్యాలు, పాటలూననీ ప్రచారం చేశారు.

భారతీయుల విద్యా విజ్ఞాన కళాకౌశలాలకు మూలం గురుకుల విద్యావిధానమని వారు గ్రహించారు. దానిని మారిస్తేకాని జాతిలో మార్పు రాదని గుర్తించారు. అందుచే లార్డు మెకాలే ద్వారా ఆంగ్లవిద్యను కాన్వెంటు స్కూళ్లను ప్రారంభించారు. అందులో చదువు కున్న వారికే ఉద్యోగాలిస్తామన్నారు. మిమ్ము లను ఉద్ధరించ టానికే మేము వచ్చామన్నారు. అప్పటికే బానిస జీవితంతో స్వబుద్ధిని కోల్పోయిన భారతీయులు వారి మాటలే సత్యమనుకొని క్రమంగా గురుకుల పరంపరను విడిచి ఆంగ్లేయ పాఠసాలలను ప్రోత్సహిం చారు. ఫలితంగా 'స్లో పాయిసన్'గా వారి భావాలు మనలో ప్రవేశించాయి. మన ధర్మ మేమిటో సంస్కృతి సభ్యతలేమిటో మరచి పోయి క్రమంగా ఆంగ్లేయ సంస్కృతీ సభ్యతల కలవాటు పడిపోయాము. దేశానికి స్వాతం త్ర్యం వచ్చి 64 సంవత్సరాలైనా (2011 నాటికి) వారు నాటిన విషబీజాలను పోగొట్టు లేకపోయాము. భౌతి కంగా స్వాతంత్ర్యం పొందినా మానసికంగా బౌద్ధి కంగా స్వాతం త్ర్యాన్ని పొందలేక పోతున్నాం. ఆంగ్ల మానస పుత్రులమై పోయాము. మహ్మదీయులు మన వైజ్ఞానిక సాహిత్యాన్ని అగ్నికి ఆహుతిచేస్తే ఆంగ్లేయులు మిగిలియున్న సాహిత్యంలో వక్రతలను జోడించారు. ముఖ్యం గాచరిత్రలో ఔరంగజేబు కనబడిన ప్రతీ గ్రంథా న్నిదగ్ధం చేయించేవాడట. అతని దృష్టిలో- 'అన్ని గ్రంథాల సారం ఖురాన్లో ఉంది ఖురాన్లో లేనిది అది సాహిత్యమే కాదు'. అందుకని ప్రపం చంలో ఖురాన్ తప్ప మరే గ్రంథం ఉండకూడ దనేది అతని మతం. అతనికన్న ముందువచ్చిన ముస్లిమ్ దోపిడీగాండ్రది కూడా అదే మతం. అల్లాఉద్దీన్ ఖిల్జీ అన్హిల్వాడా, పాట్నాల యందలి ప్రసిద్ధ పుస్తకాలయాలను దగ్ధంచేయగా, ఫిరోజ్ షాహ్తుగ్లక్ కోహనా యందలి విశాల గ్రంథాల యాన్ని దగ్ధం చేశాడు.

కుతుబుద్దీన్ ఐబక్ బీహార్ను జయించి నపుడు అక్కడ ఉండే అనేక విద్యలు తెలిసిన వేదపండి తులను లక్షకన్న ఎక్కువమందిని నరికి వేయిం చాడనీ, వారిని విద్యావంతులుగా విజ్ఞానవంతు లుగా చేసిన ఒక ప్రాచీన గ్రంథా లయాన్ని తగల బెట్టించాడనీ మహ్మదీయులు వ్రాసిన చరిత్ర గ్రంథం 'తబకాతే నాసరీ'

చెబుతుంది. బఖ్తియార్‌ఖిల్జీ నలందా, విక్రమ పురాలలోని పుస్తకాలయాలను, మఠాలను దగ్ధం చేస్తే అచటి సంస్కృత పండితులు దక్షిణ భారతానికి పారి పోయారట. ఈ విషయంలో క్రైస్తవులేమీ తక్కువ కాదు. ఎక్కడ సంస్కృత సాహిత్యం కనబడినా దానిని ధ్వంసం చేసే వారు. స్పెయిన్ దేశీయులు ఫిలిప్పీన్స్‌ను స్వాధీనంచేసుకున్నపుడు అక్కడి మందిరాలలో వారికి విశాలమైన చాలా గొప్ప పని చేశామని చాలా గర్వపడ్డారట. ఒక ఫాదరీ స్వయంగా ఏమని వ్రాశాడంటే 'స్వయంగా నేను నాచేతులతో దాదాపు 300 హస్త లిఖిత సంస్కృత గ్రంథాలను అగ్నికి సమర్పించా'నని వ్రాశాడు.

అలగ్జాండ్రియాలోని ఒక గ్రంథాలయం ధ్వంసం కావటంవల్ల మానవజాతి యొక్క వికాసం ఒక వెయ్యి సంవత్సరాల వెనుకకను తిరిగిపోయిందని పాశ్చాత్యులు వాపోతూ వుంటారు. మరి, మనదేశంలో అగ్నికి ఆహుతి చెయ్యబడ్డ సాహిత్యం వల్ల వికాసం ఎంత వెను కకు పోయివుంటుందే మీరే ఆలోచించండి. మహ్మదీయుల ఈ చర్యవల్ల కేవలం భారతదేశా నికేకాక మానవజాతికంతకీ పెద్ద కీడే జరిగింది. Edinburge Review Vol Holder II & III p. 43 ఏమంటుందంటే 'At one time Sanskrit was the one Language spoken all over the world'. ఒకప్పుడు సంస్కృత మొక్కటే ప్రపంచమంతటికి మాట్లాడే భాషగా ఉండే' దంటుంది. ఇది సత్యం. అట్లే, ఆదిమ మతం వైదికమతమే. అది పృథివిపై అంతటా ఉండేది. కాల ప్రవాహంలో అనేక భాషలు, అనేక మతాలు పుట్టుకొచ్చాయి. ప్రఖ్యాత భాషావేత్త 'మోనియర్ విలియమ్స్' ఏమంటారంటే–

a) More than this, the Hindus had made considerable advances in Astronomy, Algebra, Arithmetics, Botony and Medicine, not to mention their superiority in Grammar. Long before, some of these sciences were cultivated by the most ancient nations of Europe.

Vide Sanskrit-English Dictionary M. Monier Williams PXXI

ఐరోపాఖండంలోని కొన్ని అతి ప్రాచీన దేశాలు కొన్ని విషయాలలో విజ్ఞానవంతమగు టకు చాలాముందే భారతీయులు (హిందు వులు) ఖగోళవిజ్ఞానంలో, బీజగణితంలో, అంకగణి తంలో, వృక్షశాస్త్రంలో, చికిత్సా శాస్త్రంలో విశే, ఉన్నతిని సాధించారు.వ్యాకరణ విషయంలో వారి ఔన్నత్యం చెప్పవలసిన పనే లేదు. అది జగద్విది తము.

b) Is not the case that the earliest elements of Civilisation and enlightenment have always originated in the East, and spread from the East to the West, not from the West to the East. (Ibid, P.XX III)

"నాగరికత మరియు విజ్ఞానాలయొక్క మూలబీజాలు ఎప్పుడు తూర్పు దేశాలలోనే జరిగాయి. అవి తూర్పు నుండి పడమటకు పయనించినవే కాని, పడమటి నుండి తూర్పుకు కాదు."

ఇట్టివే దేశవిదేశీ చారిత్రిక అభిప్రాయాలు చాలానే ఉన్నాయి. ఇట్టి విద్యావిజ్ఞానాలు కను మరుగగుటకు మొదటి కారణం తురుష్కుల విధ్వంసమయితే, రెండవ కారణం ఆంగ్లేయులు ప్రవేశపెట్టిన లార్డ్‌మెకాలే విద్యావిధానం. ఆంగ్లే యులది కుటిల రాజనీతి. వారు మనదేశంలో ప్రేశించేటప్పటికే అఖండ భారతం చిన్నచిన్న రాజ్యాలుగా సంస్థానాలుగా విడిపోయివుంది. ఆంగ్లేయులు వర్తకం నిమిత్తం యిక్కడికి వచ్చినా మన దేశ పరిస్థితినిచూసి ఆక్రమించాలనే దుర్బుద్ధి వారికి పుట్టింది. వారు మన రాజన్యు లలో పరస్పర విరోధాలను సృష్టించి ఒక రాజుకు బాసటగా నిలిచి గెలిపించి అతని నుండి బహు మతిగా కొంత భూభాగాన్ని స్వీకరిస్తూ క్రమంగా భారతదేశాన్నంతా ఆక్రమించటం జరిగింది. అప్పటికీ యింకా ఈ దేశంలో ఎన్నెన్నో సంపదలు మిగిలి ఉన్నాయి. పాడి పంటలతో ప్రాకృతిక సంపదలతో సుందర మందిరాలతో రత్నాలరాశులతో ఈ దేశం తులతూగుతూ ఉండేది. కళాకౌశలాలతో విద్యా విజ్ఞానాలతో వెలుగొందుతూ ఉండేది. వైద్య ఖగోళ గణితాది శాస్త్రాలు ప్రపంచంలోనే అత్యున్నత స్థానంలో ఉండేవి. వీటన్నిటిని మించి ఆధ్యాత్మిక శాస్త్రాలు తలమానికంగా ఉండేవి.

ఆంగ్లేయ సైనికులు ఆధునిక ఆయుధాలు కలిగివుండికూడా చిన్న చిన్న రాజ్యాల సైనికు లతో పోరాడటం వారికి కష్టమయ్యేది. ఆర్యుల శౌర్యపరాక్రమాల ముందు, వారి ధైర్యసాహ సాల ముందు, వారి దేశభక్తి ముందు, వారి స్వామి భక్తి ముందు ఆంగ్లేయుల ఆయుధాలు వెలవెల పోయేవి. వీరి వీరసంస్కృతికి మూల కారణమే మిటో తెలుసుకోమని ఆంగ్లప్రభుత్వం లార్డ్ మెకాలేను పంపింది. అతడు ఇక్కడ కొంతమంది ఆఫీసర్ల సహకారంతో దేశాన్నంతా సర్వేచేశాడు. ఆ సర్వేలో వీరి ఈ సంస్కృతికి మూలం గురు కుల విద్యావిధానమని తేలింది. అప్పుడు మన దేశంలో వైదిక సంస్కృతికి పునాదివంటి బ్రహ్మ చర్యాశ్రమాన్ని రాజులు, పేదలు అందరూ నియమంగా పాటించేవారు.

బాల్యంలోనే బాలబాలికలు ఉపనయనం చేసుకొని గురుకులాలకు వెళ్ళి విద్యపూర్తి అయ్యే వరకు అక్కడే ఉండేవారు. గురువుగారి నుండి విద్యతోబాటు సదాచారాన్ని ధర్మాన్ని కూడా గ్రహించేవారు. దైవభక్తిని, ధర్మభక్తిని, దేశభక్తిని, జీర్ణించుకునేవారు. కాలికి చెప్పులు లేకుండా, ఎండవానలకు గొడుగులు పట్ట కుండా తిరిగుతూ శరీరాన్ని గట్టిపరచుకునే వారు. రుచులకు బానిసలుకాక భిక్షాన్నాన్ని మాత్రమే తింటూ మెత్తటి పరుపులపైకాక కటిక నేలపై చాపలు పరచుకొని పడుకుంటూ ఇంద్రి యనిగ్రహాన్ని నేర్చుకునేవారు. బాలబాలికల గురుకులాలు వేరువేరుగా చాలా దూరదూ రంగా ఉండేవి. బాలల గురుకులాలలో ఉపా ధ్యాయులు, ఆచా ర్యులు, పనివారు అంతా పురుషులే ఉండేవారు. బాలికల గురుకులాలలో అంతా స్త్రీలే ఉండేవారు. కామప్రసక్తి లేకుండా అఖండ బ్రహ్మచర్యాన్ని పాటించి ఓజోశక్తిని పెంచుకునేవారు. ఆత్మరక్ష ణకు పరులరక్షణకు దేశరక్షణకు అవసరమైన యుద్ధవిద్యలు అభ్యసించేవారు. కఱ్ఱసాము, కత్తి సాము మొదలైనవి బాలలేకాక బాలికలు కూడా నేర్చుకునేవారు. వీటన్నిటితోపాటు గురుకులా లలో వారు ఆత్మజ్ఞాన సంపన్నులయ్యేవారు.

ఆత్మజ్ఞానం కలిగినవారి కున్నంత ధైర్యసాహ సాలు వేరేవారికుండవు. మన వేదశాస్త్రాలు, దర్శ నాలు, ఉపనిషత్తులు ఆధ్యాత్మిక విద్యలో పరాకా ష్ఠలు. మిగిలిన భారతీయ విద్యా శాస్త్రాలలోనూ ఆత్మ పరమాత్మల చర్చ తప్పక ఉంటుంది. "నీవు ఈ శరీరానివికావు. చావు పుట్టకలులేని జీవా త్మవు. దేశంకోసం ధర్మంకోసం మరణిస్తే అనా యాసంగా స్వర్గం లభిస్తుంది. నీకొరకేకాక పరుల కొరకును కొంత శ్రమించు. పరోపకారమే పుణ్యం. పరపీడనమే పాపం.పుణ్యంవల్లనే నీకు సుఖం లభిస్తుంది. పాపంనుండి ఈ జన్మలో నీవు తప్పించుకున్నా రాబోవు జన్మలలోనైనా దానిని అనుభవించక తప్ప"దంటాయి మన శాస్త్రాలు. క్రైస్తవమతంలో ఇటువంటి ప్రేరణలుచాలా అరుదు. వారు పునర్జన్మల నంగీకరించరు. దేవుడు క్రొత్తగా జీవాత్మలను పుట్టించి ఒక శరీరంలో ప్రవేశపెట్టి ఈ లోకానికి పంపుతాడనీ, శరీరం మరణిం చినా జీవాత్మలు ఆ శరీరాన్నే అంటిపెట్టుకుని

సమాధులలో ఉంటాయనీ వారంటారు. కాలాంతరంలో 'జడ్జిమెంట్ డే' రోజున ఎక్కడో వున్న దేవుడు ఈ లోకానికి దిగివస్తాడనీ, అప్పుడు సమాధులలోవున్న జీవాత్మ లన్నీ లేచి బయటకు వస్తాయనీ ఆ రోజు న్యాయ నిర్ణయం చేసి కొందరిని స్వర్గానికి కొందరిని నరకానికి పంపుతాడని వారు నమ్ముతారు. మరి, ఇప్పుడు లోకంలో కనబడుతున్న ఆర్థిక వ్యత్యా సాలకు, ఆరోగ్య వ్యత్యాసాలకు, బౌద్ధిక వ్యత్యా సాలకు కారణమేమిటని వారి నడిగితే-అదంతా దేవుని ఇష్టం. అతడు కొందరిని ధనవంతులుగా కొందరిని పేదవారుగా, కొందరిని ఆరోగ్యవం తులుగా కొందరిని రోగులుగా, కొందరిని మేధావులుగా కొందరిని నిరక్షరాస్యులుగా పుట్టి స్తాడు. అతంతా అతని అభీష్టం. ఈ విషయంలో ప్రశ్నించకూడదంటారు. మహ్మదీయులునూ చాలావరకు ఇదే అభిప్రాయం కలిగి ఉంటారు. ఇకపోతే తేడా ఏమిటంటే-క్రైస్తవులు యహో వాను దేవుడంటే, మహ్మదీయులు అల్లాను దేవు డంటారు. యహోవా 4వ ఆకాశంలో ఉన్నా డంటే, అల్లా ఏడవ ఆకాశంలో ఉన్నాడంటారు. ఒకరు ఏసుక్రీస్తు ద్వారానే ముక్తి అంటే, ఒకరు మహ్మదు ద్వారానే ముక్తి అంటారు. అతడే అంతిమ ప్రవక్త, కురాన్ మాత్రమే అంతిమ దైవశాసనం అంటారు కాని, దేవుడనేవాడు ఒకే ఒక్కడుంటాడు. మాతా నికొకడు మనిషి కొకడు దేవుడుండడు. (God is one, one for every one) అనే శాశ్వత సత్యాన్ని మనం జీర్ణించు కోవడం మంచిది.

దీనికి భిన్నంగా వేదమతం జీవులు అనాదు లంటుంది. అంటే శ్రీకృష్ణుడు భగవద్గీతలో చెప్పి నట్లు జీవుడు **'న జాయతే మ్రియతే వా కదాచిత్........'** -ఎప్పుడూ క్రొత్తగా పుట్టలేదు. ఎప్పటికీ మరణించడు. ఒక శరీరం తరువాత మరొక శరీరాన్ని ధరిస్తాడు. పుణ్యకార్యాలు చేసినవారు ఉత్తమ శరీరాలను, పాపకార్యాలు చేసినవారు పశుపక్షి క్రిమి కీటకాదులుగాను జన్మస్తారు. బౌద్ధిక ఉన్నతికి, కళాకౌశలాలలకు అతడు పూర్వజన్మలలో చేసిన సాధనలేగాని దేవుడు అకారణంగా దయతలచి యిచ్చిన బహు మతులు (గాడ్స్ గిఫ్ట్స్) కావు. కనుక సాధనచేసి ఉన్నతిని సాధించమంటాయి వేదశాస్త్రాలు.

ప్రాచీన గురుకుల విద్యావిధానంవల్ల మరె న్నో ప్రయోజనాలున్నాయి. బ్రహ్మచారులు తల్లి దండ్రులుపెట్టిన ఆహారంతోకాక భిక్షచేసి భుజించటంవల్ల వారికి సామాజిక స్పృహ కలుగుతుంది. తాను తల్లిదండ్రులకు ఋణపడి ఉన్నట్లుగానే మానవసమాజానికి, మాతృ దేశానికి ఋణపడివు న్నట్లు గుర్తిస్తాడు. ఆ ఋణం తీర్చుకోవటానికి యత్నిస్తాడు. బ్రహ్మ చారులు ఇంట్లోకాక గురుకులాలలోనే ఉండ టం వల్ల వారి దృష్టంతా చదువుపైననే లగ్నమౌ తుంది. భాగ్యవంతుల పిల్లలు, పేదవారి పిల్లలు ఒకేచోట చాలాకాలం కలిసివుండటంవల్ల వారిలో పరస్పరం మైత్రి ఏర్ప డుతుంది. శ్రీకృష్ణ కుచేలులవలె గృహస్థాశ్రమం లో ప్రవేశించినా అన్యోన్య సహకారులుగా ఉంటారు. తద్వారా దేశం సుఖసంతోషాలతో పర స్పర ప్రేమానురా గాలతో కూడి అన్ని రంగాలలోను ఉన్నతి చెందుతుంది.

మన ప్రాచీన గురుకుల వ్యవస్థ

ప్రాచీన గురుకులాలలో బోధనావ్యవస్థ నేటి విద్యాలయాలవలె భారంగాకాక అనాయా సంగా తక్కువ ఖర్చుతో జరిగేది. ఒక్క ఆచా ర్యుడే వేల మంది విద్యార్థులకు విద్యాబోధన చేసేవాడు. ఎట్లంటే-ఒక ఆచార్యుడు ఒక గురుకులాన్ని పెట్టుకొని పదిమందికి బోధించి వారిని పై తర గతులకు తీసుకువెళ్ళేవాడు. ఆయన పై తరగతు లవారికి బోధిస్తూవుంటే శిష్యులు ఒక్కొక్కరు మరొక పదిమందికి చిన్న తరగతుల వారికి బోధించేవారు. ఈ విధంగా పై తరగతులవారు క్రింది తరగతులవారికి బోధిస్తూ ఉండటంవల్ల బోధించేవారి విద్య గట్టిపడేది. క్రమంగా వేల మందికి విద్య అనాయాసంగా లభించేది. ఆంగ్లేయులు ఈ బోధనా వ్యవస్థను చూసి ఆశ్చర్య పోవటమేకాక తమ దేశంలోనూ దానిని ప్రవేశ పెట్టారు. విద్యార్పటయుడైన డాక్టర్ ఎండూబెలె అనే ప్రసిద్ధ ఆంగ్లేయుడు మన బోధనాపద్ధతిలోని సౌలభ్యాన్ని గుర్తించి ఇంగ్లాండ్‌కు తిరిగివెళ్ళి అక్కడ ఈ పద్ధతిని అమలుపరచి మంచి ఫలితాలను పొందాడు. ఆయన 3-6-1814వ తేదిన బంగాల్ గవర్నర్ జనరల్‌కు ఈ విధంగా ఉత్తరం వ్రాశాడు.

The mode of instruction that from time immemorial has beenpractised under these masters has received the highest ribute of praise by its adoption in this (England) country. Under the direction of the Reverend Dr. Bell, formerly Captain in Madras, and it has now become the mode by which education is conducted in our national establishment from a Conviction of the facility it affords in the acquisition of language by simplifying the process of instruction.

"This Venerable and benevolent institution of the Hindus is represented to have withstood the shork of revolution ......" Letter from the court of Director, to the Governor General in Council of Bengal, dated 3rd June 1814.

ఇట్టి సౌలభ్య సమగ్ర విద్యావిధానం, వ్యవస్థలే వీర ఆర్య సంస్కృతికి మూలమని లార్డ్ మెకాలే సూచించాడు. దానితో ఆంగ్లప్రభుత్వం జాగ్రత్త పడటం మొదలు పెట్టింది. ముందుగా భారత దేశంలో ఎన్ని గురుకులాలున్నాయో సర్వేచే యించి రిపోర్టు పంపమంది. కొంతమంది ఆఫీ సర్ల సహకారంతో మెకాలే సర్వేచేయించగా ఇంచుమించు ప్రతీ గ్రామానికి ఒక గురుకులం ఉన్నట్లు తేలింది. ఉదాహరణకు మద్రాసు ప్రెసిడెన్సీని తీసుకుంటే-ఆ రాష్ట్రంలో గ్రామాల సంఖ్య 1,52,000 లు కాగా గురుకులాల సంఖ్య 1,50,000. సర్వే నిర్వహించినవారు వీటిని కళా శాల స్థాయి విద్యా సంస్థలన్నారు. వీటిని హైయ్యర్ లెర్నింగ్ ఇనిస్టిట్యూషన్స్' అని పేర్కొ న్నారు. ఇవేకాక, చిన్న చిన్న బడులు చాలా ఉండేవి. గ్రామానికి 2, 4 వీధిబడు లుండేవి. వాటిని లెక్కలోకి తీసుకోలేదు.

ఈ కళాశాలలో కేవలం మెడికల్ కాలేజీల సంఖ్య 1,500. వీటిలో కేవలం మెడిసినేకాక చాలా ఉన్నతమైన సర్జరీ కూడా నేర్పబడుతూ వుండేది. ఆ సర్జరీ నేర్పేవారు నాయీలు వారి వద్ద విద్యనభ్యసించే వారిలో 70 శాతం శూద్రులు, 30 శాతం ఉన్నత కులాల వారు ఉండేవారట. దీనిని బట్టి అప్పుడు పెద్దగా కుల వివక్ష ఉండేదికాదనిపిస్తున్నది. శూద్రులనబడే వారును పెద్దపెద్ద చదువులు చదువుకొని కాలేజీ లెక్చరర్స్, ప్రొఫెసర్స్ అయ్యేవారన్న మాట. అట్లే, పెరియార్ జాతివారు ఇంజనీరింగ్ కళాశాలలో లెక్చరర్స్‌గా ఉండే వారట. దక్షిణ భారతదేశంలో అత్యంత కళాకౌశలాలతో నిర్మింపబడిన దేవాలయాలన్నీ పెరియార్లే నిర్మించినట్లు చెబుతారు. వీరంతా 'ఆర్కిటెక్ట్ యింజనీయర్లు' ఇట్టి కాలేజీలు కేవలం మద్రాసు ప్రెసిడెన్సీలో 20,000 లకు పైగా ఉండేవట. ఈ ఉన్నతిని సహించలేని ఆంగ్ల ప్రభుత్వం ముఖ్యంగా మద్రాస్ కలక్టర్‌గా పనిచేసిన ఎ.ఓ. హ్యూమ్ (ఇతడే తరువాత కాంగ్రెస్ సంస్థను స్థాపించాడు) ఒక నోటిఫికేషన్ ద్వారా పెరియార్లు దేవాలయాలను నిర్మించ కూడ దని శాసించాడు. దానితో క్రమంగా ఆ అద్భుత శిల్పకళ (ఆర్కిటెక్ట్) క్షీణించిపోయింది. ప్లాస్టిక్ సర్జరీ కళనూ యిట్లే ఆంగ్లేయులు నాశనం చేశారు. ఈ సందర్భంగా యథార్థంగా జరిగిన ఒక సంఘటన తెలిసికోవటం మంచిది. దీనివల్ల మన దేశంలో ప్లాస్టిక్ సర్జరీ ఎంత ఉన్నత స్థితిలో ఉండేదో అర్థమౌతుంది.

(...తరువాయి వచ్చే సంచికలో)

जीवन और लक्ष्य

-स्वतंत्र वार्ता

व्यक्ति जीवन के लिये अनेक साधन जुटाता है । साधन जीवन के लिये हैं, मगर जीवन किसलिये हैं ? व्यक्ति इसका स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाता । जीवन कैसे बीत गया ? इसका हिसाब लगाने को वह तैयार नहीं रहे हैं-इसका हिसाब लगाने को तत्पर नहीं । वह सारा दिन बैठा सम्पत्ति का हिसाबलगाता रहता है । इंसान के जीवन का लक्ष्य प्रेम, आनन्द और शान्ति प्राप्त करना है । इन्सान अपूर्ण है-पूर्ण नहीं, अल्पज्ञ है-सर्वज्ञ नहीं । इंसान के पास बहुत कुछ है, मगर सब कुछ नहीं है । इंसान सर्वथा निर्दोष नहीं हो सकता । इसका कारण यह है कि सम्पूर्णता तो केवल परमात्मा में है, मनुष्य में कही न कहीं कमी जरूर रहेगी । सुख-शांति के लिये अतृप्त इंसान तृप्ति की खोज में है । हर आदमी ऐसा सुख, चैन, शान्ति चाहता है, जो कभी छिन्न-भिन्न न हो । हर व्यक्ति उस पूर्णता की खोज में है और वहपूर्णता तो केवल परमात्मा में है।

व्यक्ति चो सारा जीवन सुख की तलाश में छटपटाता रहता है । परमात्मा प्रेम का सागर है, उससे बढ़कर प्रेम-पुंज कोई नहीं हो सकता । वह प्रियों का भी प्रिय है । भक्त कहता है, ''प्रभु ! सबसे बड़ा आकर्षण तेरा ही है, तुझसे बढ़कर प्रिय, मधुर, आकर्षण का बिन्दु और कोई नहीं है । दुनिया की पीड़ा से त्रस्त होकर तेरे द्वार पर आये हैं । प्रभु ! ऐसी कृपा करो कि यह जीवन आपके चरणों में बीते । जल बरसता है, चातक चोंच उठाये आसमान की तरफ देखकर तड़पता रहता है, स्वाति नक्षत्र की बूंद की ओर ध्यान लगाये रहता है। प्रभु ! हमारा ध्यान भी, हमारा मन भीतेरी ओर लगे जाये ।'' सूर्यसुखी का फूल उसीको देखकर लहराता है, मुस्कराता है, उसी की याद में जीवन बीतता है । परमात्मा हमें भी ऐसी लगन दो । प्रेम-स्वरूप परमात्मा हम तेरा आहाइ्वन करते हैं कि ''आओ, इस हृदय में अपनी कृपा बरसा ।'' हृदयप्रेम पूर्ण हो तो प्रार्थना के फूल परमात्मा के चरणों में अर्पित होते है । हृदय में प्रेम होना चाहिये और लगन गहरी होनी चाहिये ।

व्यक्ति को भोजन मिल जाये मगर भूख न हो, तो भोजनका स्वाद नहीं मिलेगा । भोजन नहीं है, भूख लगी हो, तो भोजन के लिये व्याकुलता रहेगी । जिसके प्राणों में उससे मिलने की भूख जागी हो वह रोयेगा, उसके लिये गायेगा, उसके लिये छटपटायेगा और उसके लिये हर कर्म करेगा । अतिशय प्रेम से पुकारो भगवान को । वह तो प्रेम के आकर्षण में बंधने के लिये तत्पर है । प्रेम न हो तो भगवान और भक्त आमने-सामने भी हो, तो व्यक्ति के मन में कोई भूख नहीं जगेगी । कंस के सामने थे कृष्ण-पर कंस को भूख तो नहीं थी । अगर हृदय में छटपटाहट नहीं तो किसी भी महान पुरुष की महानता की ओर बढ़ नहीं पाओगे । हृदय में न्याकुलता हो, लगन हो तो व्यक्ति एक-एक कदम गुरू की ओर बढ़ाता है और ज्ञान प्राप्त करता है, नहीं तो दुनिया के काम जरूरी लगते हैं । व्यक्ति सुविधा के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना चाहता है । जिसके हृदय में प्रेम हो उसके सामने कोई विघ्न-बाधा नहीं, कोई संकट नहीं, ऐसा व्यक्ति बाधा भी पार कर लेगा ।

जीवन में लक्ष्य की प्रापित के लिये मुसीबतों का सामना तो करना ही पड़ेगा । संसार परीक्षा केन्द्र है, परीक्षा तो देनी पड़ेगी । जीवन के सफर में सुख-दुःख दोनो साथ-साथ चलते हैं । दुःख की लकीरे मन को दबाने लगें तो अपने को कमजोर मत पड़ने दो, धैर्य से आगे बढ़ते जाओ । रोने से दुख कम नहीं होगा । रोते रहने से मुसीबतों का ढेर लग जाता है । जब मुस्कराते हैं, तो मुसीबतें सिकुड़ जाती हैं और जब हंसते हैं, तो मुसीबतें हल्की पड़ जाती है । जीवन चुनौती है, इसका सामना करना पड़ेगा ।

भक्त वह है जिसके हृदय में सच्ची मुख हो और जिसकी चाहत में सबसे पहले परमात्मा है । वह कहता हैं, ''प्रभु, ' एक में न दस में, न बीस में न सौ में, कितना भी प्रलोभन मेरे सामने हो, परमात्मा किसी भी कीमत में तेरे नाम का सौदा न करूं । तेरे लिये हर कठिनाई पार करके आऊँ । तू मुझे निमंत्रण देता है, तो मैं भी आने को तैयार हूं । तू मेरे अंदर बसा हुआ है, मेरे रोम-रोम को भिगो देना । मैं चाहता हूं, तू बरस और मैं भीगूं । तुम बरसो मैं जी भर कर नहाऊँ, दोनों भुजा पसारे ।

चकोर का ध्यान जैसे चन्द्रमा की ओर लगा रहता है, पूर्णिमा का चांद हो, नीरव-रात्रि में कहीं चकोर बोल रहा हो, चन्द्रमा के आकर्षण को देखर उड़ान पर उड़ान भरता है । सामर्थ्य हो न हो, दीवानगी में उड़ान भरता है । जो परमात्मा के दीवाने है वे कहते है, ''यह जन्म भी तेरे हवाले हो जाए, मैं सबको दांव पर लगाना चाहता हूं । यहदीवानगी परमात्माकी देन हुआ करती है । जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति के लिये मुसीबतों का है, परीक्षा तो देनी पड़ेगी । जीवन के सफर में सुख-दुःख दोनों साथ-साथ चलते हैं । दुःख की लकीरे मन को दबाते लगे तो अपने को कमजोर मत पड़ने दो, धैर्य से आगे बढ़ते जाओ । रोने से दुख कम नहीं होगा । रोते रहने से मुसीबतों का ढेर लग जाता है । जब मुस्कारते हैं, तो मुसीबते सिकुड़ जाती हैं और जब हंसते हैं, तो मुसीबतें हल्की पड़ जाती है । जीवन चुनौती है, इसका सामना करना पड़ेगा ।

जीवन संघर्ष है, तो संघर्ष की तैयारी करके बिना डर के आगे बढ़ना है, क्योंकि डर, भय, चिन्ता से व्यक्ति की शक्तियाँ क्षीण होती है । उन महापुरुषों के उदाहरण सामने रखिये जो हंसते हुए मुसीबतों का सामना करके मुसीबतों के पार निकल गये । उनका आदर्श मान कर अपने को उनके अनुसार ढालना शुरू कर दो । आप जिस इष्टदेव को मानते हैं, उनके स्वरूप को अपने भीतर लाइये, फिर उनके अनुरूप अपने को ढाले ।

भगवान कृष्ण के जीवन को अगर हम देखते तो उनका जन्म ही दुःख में हुआ । चारो ओर दुःख की बदली छाई हुई थी, आंधी तूफान चल रहाथा, माँ की छाया नहीं मिली, दूसरे घर में जाकर पले । भगवान कृष्ण कहते हैं कि मैंने दुःख को अपना साथी नहीं बनाया । दुःख आया रास्ता रोकने के लिये, मगर मैं उसको लांघता हुआ आगे चला गया । दुःख को याद करके उसे सिर पर ओढ़ कर मत चलिये । भगवान कृष्ण समृद्धि में आकर भी मित्र को भूले नहीं । दबे हुए, ठुकराये हुए

యజ్ఞ మందిరం ప్రారంభం

తార్నాక డివిజన్ శాంతినగర్ లోని ఆర్య సమాజ్ భవనంలో నూతనంగా నిర్మించిన స్వామి విరజానంద సరస్వతి యజ్ఞ మందిరంను ప్రారంభించారు. దీనికి న్యూఢిల్లీకి చెందిన ఆర్య సమాజ్ మహామంత్రి ప్రొ॥ విఠల్ రావు ఆర్య ముఖ్య అతిథిగా హాజరయ్యారు. ఈ సందర్భంగా ఆయన మాట్లాడుతూ స్వామి దయానంద సరస్వతి బోధనలను ప్రచారం చేయాల్సిన బాధ్య వర్య సమాజ్‌పై ఉందన్నారు. అనంతరం డా॥ విశ్వశ్రవా ఆధ్వర్యంలో దేవయజ్ఞం నిర్వహించారు. కార్యక్రమంలో శాంతినగర్ ఆర్య సమాజ్ ప్రధాన్ సత్యనారాయణ, మంత్రి పి. మల్లేష్, కోశాధికారి సి. దశరథ్, సి. దశరథ్, ఉపమంత్రి సి. నాగరాజ్, ఉప ప్రధాన్ శ్రీబుధ్ ఎం. ధర్మవీర్, సి.ధరమ్ ప్రకాశ్, గోపి, మాధవ్, జ్యోతి, మహాలక్ష్మి, పద్మ తదితరు లున్నారు.

जिसका हक छीन लिया गया था, इस युधिष्ठर का साथ दिया, क्योंकि युधिष्ठर धर्म के साथ था और भगवान ने धर्म का साथ दिया । भगवान अधर्मियों के कुचक्र के तोड़ते हैं । होठो पर बांसुरी और माथे पर मोरपंख-मस्ती का, उत्सव का प्रतीक है । बादल देखकर मोर नाचना शुरू कर देता है, एक आशा की किरण के सहारे ही मोरपंख फैलाकर नाचना शुरू कर देता है । यह इस बात का प्रतीक है कि जीवन में हंसना-गाना, मुस्कराना छोड़ना नहीं है । हंसता-गाता व्यक्ति हीजीवन में लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है, अन्यथा वह चिन्ताओं में उलझ कर रह जाता है । दीमक जैसे लकड़ी को धीरे-धीरे काटकर कमजोर कर देती है, ऐसे ही छोटी-छोटी चिंतायें-निराशाएं दीमक की तरह शरीर को खा जाता है । दुनिया के मालिक ने अपनी ही शक्ि तयां आप में दी हैं, जब आप सीमाओं में होते हैं, तो उसकी झलक आपके अंदर मिलती है । एक मंत्र में कहा गया है, ''हे अमृत के अधिकारीगण, तुम ईश्वर की संतान हो, पूर्ण-पवित्र आत्मा हो । इस मृत्युभूमि पर तुम देवतुल्य हो,तुम भेड़ नहीं शेर हो । उठो ! स्वयं को पहचानो, भेड़ के लिबास उठाकर फेंक दो, क्योंकि तुम दुनिया में जीने के लिये आये हो । कोई वाधा इतनी शक्तिशाली नहीं कि तुम्हारे पांच की जंजीर बन जाए ।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य अपने आपको जानना और प्रभु को पाना है । दुनिया की चीजे सुख-सुविधा देती हैं, लेकिन इनको ही इकट्ठा करने में जीवन सह मत बिता देना । जिंदगी का साज तैयार करने में ही समय मत बिता देना, दूसरों से ताल मिलाते-मिलाते ही जीवन का अमूल्य समय गंवा मत देना । जीवन अवसर है लक्ष्य की ओर बढ़ने का, पूरी व्यवस्था बना कर चलो । संसार के रंगमंच पर कुछ ऐसा करो कि लोगों की जुबान पर वाह-वाह हो । दुनिया से जाओ तो लोगों की आंखों में आँसू हों कि तुम्हारीतो अभी बहुत जरूरत थी,तुम कहां चले गये ? जीवन क्षणभंगुर है, समय नपा-तुला मिला है । जीवन का जो अमूल्य समय मिला है, इसमें संसार के रंगमंच पर आप कर्म करने आये हैं, कुछ यादों की लकीरें ऐसी छोड़ो कि जब तुम दुनिया से जाओ तो तुम्हारे होठों पर मुस्कराहट हो और लोगों की आंखो में आंसू । कर्म से जी चुराकर नहीं बैठना, आलसी व्यक्ति को कभी भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती । इस जीवन का पथ नहीं शांत भवन में निश्चिंत रहना, किंतु पहुंचना उस सीमा तक जहां जाकर कोई राह नहीं ।

अपनी क्षमताओं को उभारने के लिये जीवन में संतुलन की बहुत जरूरत है । जिसमं संतुलन है उसके अंदर प्रसन्नता है, जो परमात्मा ने दिया उसे परमात्मा की कृपा का फल मानकर स्वीकार करो तो प्रसन्नता आयेगी । प्रकृति में बैठने से प्रसन्नता आयेगी । जीवन में सदा गाते-गुनगुनाते रहो, खिले रहो। प्रसन्नता, उत्सव, उल्लास-तप भी है और भक्ति भी है । प्रसन्नता से प्रभु के द्वारजाओ और उसकी अनंत-अनंत कृपाओं के लिये कृतज्ञता प्रकट करो । प्रसन्नता और उल्लास जिसके स्वाव में उतर आया, वह व्यक्ति जीवन का लक्ष्य अवश्यपूरा करेगा । प्रसन्नता पाने के लिये व्यवस्था को सुव्यवस्था में बदलो । सबसे पहले ध्यान रखें कि जीवन में जब भी परिवार की, समाज की स्थिति सामने आये, आप संतुलन कायम रखे ।

किसी की कड़वी बात सुनकर, निंदा चुगली सुनकर आवेश में न आये, आग-बबूला मत हों, मस्तिष्क को ठंडा रखे, शांतिपूर्वक एकांत में बैठकर विचारकरें । मधुर और मीठे बने रहना भी सफलता की कुंजी है । सदा मधुर बाणी बोलें, वाणी ऐसी मधुर हो कि मुंह से फूल झड़ रहे हैं । विपरीत वातावरण के बीच हंसते-मुसकुराते हुए शांत रहकर धैर्यपूर्वक सांसारिक कार्य रने वाला व्यक्ति जरूर अपनी मंजिल तक पहुंचता है । एक अनुशासनकी डंडी हाथ में लेकर अपने को प्रेरित कीजिये तो आप अवश्य ही लक्ष्य तक पहुंचोगे ।

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-03-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,

Arya Samaj Established : 1875

Founder: Maharshi Swamy Dayananda Saraswati

Read "Satyartha Prakash" for True Knowledge

ARYA SAMAJ

145th ANIVERSARY DAY

on Wednesday 25th March 2020

from 5-00 a.m. to 5-00 p.m.

All are Welcome !

ARYA SAMAJ NEW BOWENPALLY

Branch Since : 1939 Branch Founder :

Late B.K. NARASIMHA

H.No. 1-10-421, Peddathokatta,

New Bowenpally, Secunderabad - 500011 (T.S.)

Enquiry : Cell - 9652669732

Affiliated to :

Arya Prathinidhi Sabha, A.P. -Telanganga,

Maharshi Dayanand Marg,

Sultan Bazar, Hyderabad.

Regd. No. 6-52 Fasli-1342/84

All are cordially invited to perform Yagna and Yoga

Secretary :

BRUHASPATHI GURUJI

Arya Samaj New Bowenpally,

Secunderabad.

॥ ఓ౩మ్ ॥

ఆర్య సమాజ స్థాపన : 1875

సంస్థాపకులు :

మహర్షి దయానంద సరస్వతి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ

సుల్తాన్ బజార్ అనుబంధిత శాఖ

ఆర్య సమాజ్ న్యూ బోయినపల్లిలో

నెం. 1-10-421, పెద్దతోకట్ట, న్యూబోయిన్‌పల్లి,

సికింద్రాబాద్-11. తెలంగాణలో

ఆర్య సమాజ్ 145వ వార్షికోత్సవము

తేది : బుధవారము, 25 మార్చి 2020

ఉ॥ 5-00 గం॥ల నుండి సా॥ 5-00 గంటల వరకు

అందరికి ఇదే మా ఆహ్వానము

ఆర్య సమాజ బోయినపల్లి శాఖ సంస్థాపకులు

కీ॥ శే॥ బి.కె. నర్సింహ్మ గారు

(1939)

నివేదికులు : **బృహస్పతి గురూజీ**

కార్యదర్శి

ఇంక్వైరీ సెల్ నెం : 9652669732

ఆధార్ నెం. : 83528423337.

సత్యజ్ఞానం కొరకు

'సత్యార్థ ప్రకాశమును' చదవండి.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.